• जयपुर, शुक्रवार, 5 जुलाई 24 • वर्ष 13 • अंक 307 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 1 रुपये

www.chamaktarajasthan.in| Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2024-25

RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक

राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

# चमकता राजस्थान

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

अजमेर, सीकर, झुंझनुं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

**सुविचार**

''सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।''

● **स्वामी विवेकानंद**

पेज @3 कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा का भजनलाल मंत्री मंडल से...

पेज @5 जोन-10 में पन्द्रह बीघा बेशकीमती सरकारी भूमि को कराया...

पेज @8 » पहली बारिश ने खोली सार्वजनिक निर्माण विभाग के कामों...

**एससीओ बैठक** | **प्रधानमंत्री मोदी ने उठाया आतंकवाद और संप्रभुता के सम्मान का मुद्दा, बोले**

## सभी पहलुओं पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत

एजेंसी

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक में देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, गैर-भेदभावपूर्ण व्यापार नीतियों जैसे मुद्दों को उठाया और वैश्विक स्तर पर संघर्षों का साझा समाधान तलाशने की अपील की। उल्लेखनीय है कि मध्य एशिया के देश तथा चीन, रूस और पाकिस्तान भी संगठन का हिस्सा हैं।

विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर एससीओ शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए अस्ताना, कजाकिस्तान में हैं। यहां शिखर सम्मेलन में विदेश मंत्री ने

प्रधानमंत्री का वक्तव्य पढ़ा। इसमें प्रधानमंत्री ने कहा कि एससीओ एक सिद्धांत-आधारित संगठन है, जिसकी सर्वसम्मति इसके सदस्य देशों के दृष्टिकोण को संचालित करती है। हम देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सिद्धांतों के विपरीत कोई भी कदम नहीं उठाने पर भी सहमत हुए हैं।

कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान आवश्यक है। इसी तरह गैर-भेदभावपूर्ण व्यापार अधिकार और पारगमन व्यवस्थाएं भी हैं। एससीओ को इन पहलुओं पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

### आंतकवाद वैश्विक शांति के लिए एक बड़ा खतरा

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आतंकवाद से मुकाबला करना एससीओ के मूल लक्ष्यों में से एक है। अगर इस समस्या को यूं ही छोड़ दिया गया तो यह क्षेत्रीय और वैश्विक शांति के लिए एक बड़ा खतरा बन सकता है। आतंकवाद को किसी भी तरह से सही नहीं ठहराया जा सकता। सीमा पार आतंकवाद पर निर्णायक प्रतिक्रिया जरूरी है और आतंकवाद के वित्तपोषण और भर्ती का दृढ़ता से मुकाबला किया जाना चाहिए। हमें युवाओं में कट्टरवाद को फैलने से रोकने के लिए भी सक्रिय कदम उठाने चाहिए।

### जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर जतायी चिंता

जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर प्रधानमंत्री ने कहा कि आज हमारे सामने यह प्रमुख चिंता का विषय है। हम उत्सर्जन में प्रतिबद्ध कमी लाने की दिशा में काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने वक्तव्य की शुरुआत में ईरान को संगठन के सदस्य के रूप में हिस्सा के लिए बधाई दी और हेलीकॉप्टर दुर्घटना में राष्ट्रपति राईसी और अन्य लोगों के दुखद निधन पर गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आज हम यहां दुनिया भर में महामारी के प्रभाव, संघर्ष, बढ़ते तनाव और विश्वास की कमी की पृष्ठभूमि में एकत्र हुए हैं। इन घटनाओं ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों और वैश्विक आर्थिक विकास पर महत्वपूर्ण दबाव डाला है। वैश्वीकरण से कुछ समस्याएं बढ़ गई हैं।

## भारत-आस्ट्रेलिया ने द्विपक्षीय रक्षा सहयोग से संबंधित कई मुद्दों की विस्तृत समीक्षा की

एजेंसी

**नयी दिल्ली।** रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और ऑस्ट्रेलिया के उप प्रधानमंत्री तथा रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्ल्स ने बृहस्पतिवार को टेलीफोन पर बातचीत की तथा दोनों देशों के रक्षा संबंधों की समीक्षा की।

श्री सिंह ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा, 'आस्ट्रेलिया के रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्ल्स के साथ बात की। हमने द्विपक्षीय रक्षा सहयोग से संबंधित कई मुद्दों की समीक्षा की। हिन्द प्रशांत में दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सहयोग पर भी चर्चा हुई। हम भारत-ऑस्ट्रेलिया व्यापक रणनीतिक साझेदारी को बहुत महत्व देते हैं।'

रक्षा मंत्रालय के अनुसार दोनों

मंत्रियों ने व्यापक रणनीतिक साझेदारी के तहत रक्षा सहयोग में शानदार प्रगति का उल्लेख किया और नवम्बर 2023 में हुए पिछले भारत-ऑस्ट्रेलिया टू प्लस टू मंत्रिस्तरीय संवाद के बाद से संबंधों में आई गति की सराहना की। ऑस्ट्रेलिया भारत को प्रमुख सुरक्षा भागीदार मानता है और यह बात उनके राष्ट्रीय रक्षा रणनीति दस्तावेज में प्रमुखता से कही गयी है।

श्री मार्ल्स ने लगातार दूसरी बार रक्षा मंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के लिए श्री सिंह को बधाई दी और भारत में लोकतांत्रिक प्रणाली की सराहना की। उन्होंने रक्षा मंत्री को टीम इंडिया के टी 20 विश्व चैंपियन बनने पर भी बधाई दी।

**न्यूज अपडेट**

### हाथरस हादसे के बाद संत प्रेमानंद ने लिया बड़ा फैसला, पदयात्रा अनिश्चितकाल के लिए की बंद

**वृन्दावन/एजेंसी।** हाथरस में सत्संग के दौरान हुई भगदड़ में 121 लोगों की मौत से सबक लेते हुए संत प्रेमानन्द ने रोजाना तड़के निकलने वाली पदयात्रा अनिश्चितकाल के लिये बंद कर दी है। संत के दर्शन करने के लिये पदयात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। संत प्रेमानन्द रोजाना रात करीब 2:15 बजे छटीकरा मार्ग स्थित अपने आवास से पदयात्रा करते हुए परिक्रमा मार्ग स्थित अपने आश्रम श्रीहित राधा केली कुंज पहुंचते हैं। यहां उनके प्रवचन और एकांतिक वार्ता का कार्यक्रम होता है। संत के दर्शन करने के लिये उनके आवास से आश्रम तक करीब दो किलोमीटर तक भक्तों की भीड़ जुट जाती है। दर्शन पाने को ललियत भक्तों को संत के परिक रों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। भीड़ के मद्देनजर पदयात्रा पर रोक लगाने का फैसला लिया गया है। इस सम्बन्ध में श्रीहित राधा केली कुंज की ओर से अपने सोशल मीडिया पेज भजन मार्ग पर अपील डाली गई है। जिसमें कहा गया है कि हाथरस में हुई घटना बहुत ही हृदय विदारक व अत्यंत दुःखद है, जिसमें हम सबकी गहन सवेदनाएं परिजनों के साथ हैं। भविष्य में ऐसी कोई भी घटना ना घटे, ऐसी ठाकुर जी के चरणों में प्रार्थना है। उपरोक्त घटना के संदर्भ में सावधानी बरतते हुए महाराजजी, जो पद यात्रा करते हुए रात्रि 02:15 बजे से श्री हित राधा केलि कुंज जाते थे।

**राजभवन में राज्यपाल ने दिलाई पद एवं गोपनीयता की शपथ**

## हेमंत सोरेन ने तीसरी बार संभाली सत्ता की बागडोर

संवाददाता

**रांची।** जेल से रिहाई के बाद हेमंत सोरेन गुरुवार को एक बार फिर झारखंड के मुख्यमंत्री बन गए। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने राजभवन के दरबार हॉल में आयोजित कार्यक्रम में उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। राज्यपाल ने उन्हें शुभकामनाएं भी दी। इसके साथ हेमंत सोरेन तीन बार सत्ता की बागडोर संभालने वाले मुख्यमंत्री बन गए। उल्लेखनीय है कि हेमंत सोरेन 13 जुलाई, 2013 को पहली बार मुख्यमंत्री बने थे। इसके बाद 29 दिसंबर, 2019 को और अब तीसरी बार चार जुलाई को मुख्यमंत्री बने हैं।

मालूम हो कि राज्य में गुरुवार की सुबह से ही मुख्यमंत्री आवास से लेकर राजभवन के बीच सियासी सरगर्मी बनी हुई थी। सुबह सीएम हाउस में बैठक के

बाद हेमंत सोरेन सहयोगियों के साथ राजभवन गये थे। इसके बाद राज्यपाल ने उन्हें मुख्यमंत्री के तौर पर मनोनीत किया। शपथ ग्रहण के लिए आमंत्रित भी किया।

इसके बाद चर्चा रही कि सात जुलाई को हेमंत सहित कैबिनेट में शामिल किए गये सहयोगियों के साथ शपथ ग्रहण करेंगे। इस दिन रांची में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा का भी कार्यक्रम होना है। इसलिए इस पावन दिन को शपथ ग्रहण समारोह होगा लेकिन दोपहर होते-होते यह खबर सामने आई कि गुरुवार की शाम पांच बजे राजभवन में हेमंत सोरेन अकेले मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। मंत्रिमंडल में जो भी नाम तय होंगे, उनके लिए शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम बाद में आयोजित होंगे।

### पिता शिबू सोरेन से लिया आशीर्वाद

शपथ ग्रहण से पहले हेमंत सोरेन ने पिता और सांसद शिबू सोरेन के पास जाकर उनके चरण छूए। साथ ही सोशल मीडिया पर इसे शेयर करते हुए लिखा कि बाबा से मिलकर आगामी चुनौतियों से निपटने के लिए उनका आशीर्वाद लिया।

### ये रहे उपस्थिति

मौके पर झामुमो प्रमुख और हेमंत के पिता शिबू सोरेन, माता रुपी सोरेन, कार्यवाहक मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन, मंत्री बादल, रामेश्वर उरांव, सत्यानंद भोक्ता, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, सांसद महुआ माजी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर, विधायक कल्पना सोरेन, दीपिका पांडेय सिंह, बैजनाथ राम सहित सत्ता पक्ष के सभी विधायक और अन्य भी उपस्थित थे।

## भारत 2025 तक अंतरिक्ष व गहरे समुद्र में भेजेगा पहला मानव : केंद्रीय मंत्री

**नई दिल्ली/एजेंसी।**

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जितेंद्र सिंह ने गुरुवार को राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि भारत 2025 तक अंतरिक्ष और गहरे समुद्र में पहला मानव भेजेगा।

मंत्री ने कहा, भारत के मानव अंतरिक्ष मिशन गगनयान के लिए चार अंतरिक्ष यात्रियों - तीन ग्रुप कैप्टन और एक विंग कमांडर का चयन किया गया है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के गगनयान मिशन का लक्ष्य अंतरिक्ष में तीन दिवसीय मानव मिशन भेजना है। मिशन पृथ्वी से 400 किलोमीटर ऊपर परिक्रमा कर वापस लौटेगा।

भारतीय वायुसेना के चार ग्रुप कैप्टन - प्रशांत बालकृष्णन नायर, अजीत कृष्णन और अंगद प्रताप तथा विंग कमांडर शुभांशु शुक्ला को 2025 के लिए निर्धारित मिशन के लिए चुना गया है।

मंत्री ने यह भी बताया कि भारत का डीप-सी मिशन 2025 में तीन भारतीयों को गहरे समुद्र में भेजेगा।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) की पहल 'समुद्रयान' के नाम से जानी जाने वाली यह पहल स्वदेशी रूप से विकसित मानवयुक्त पनडुब्बी वाहन मत्स्य 6000 पर सवार होकर मध्य हिंद महासागर में 6,000 मीटर की गह-राई तक जाने वाला एक चालक दल अभियान होगा।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की हाल की उपलब्धियों के बारे में भी बताया।

उन्होंने कहा कि रॉकेट और उपग्रहों को लॉन्च करने के अलावा, अंतरिक्ष क्षेत्र कृषि, बुनियादी ढांचे, संचार, स्वास्थ्य सेवा आदि पर सकारात्मक प्रभाव डालेगा।

उन्होंने कहा,2022 में हमारे पास केवल एक अंतरिक्ष स्टार्टअप था और 2024 में अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी भागीदारी के लिए खोलने के बाद हमारे पास लगभग 200 स्टार्टअप होंगे और उनमें से कई की वैश्विक क्षमता है। उन्होंने यह भी बताया कि कुछ ही महीनों में अंतरिक्ष क्षेत्र में 1,000 करोड़ रुपये का निजी क्षेत्र का निवेश आया है।

## देश के पूर्व उप प्रधानमंत्री की तबीयत फिर बिगड़ी, अस्पताल में भर्ती

**नई दिल्ली/एजेंसी।**

देश के पूर्व उप प्रधानमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी की तबीयत एक बार फिर बिगड़ गई है। उन्हें दिल्ली के अपोलो अस्पताल में एडमिट कराया गया है। जहां डॉक्टरों की निगरानी में उनका इलाज चल रहा है। सीनियर न्यूरोलॉजिस्ट डॉक्टर विनीत सूरी की देखरेख में उनका इलाज चल रहा है। भारत रत्न लालकृष्ण आडवाणी को एक सप्ताह पहले हालत बिगडऩे पर देर रात करीब 10.30 बजे एम्स के यूरोलॉजी विभाग में भर्ती कराया गया था। हालत में सुधार होने पर अगले दिन उनको हॉस्पिटल से छुट्टी मिल गई थी। आडवाणी को इसी साल 30 मार्च को भारत रत्न से नवाजा गया था। साल 2015 में उनको देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान यानी कि पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। भारत रत्न से सम्मानित होने के ऐलान पर आडवाणी ने कहा था, 'मैं सम्मान के साथ भारत रत्न स्वीकार करता हूं।

**पुलिस की बड़ी कार्रवाई :**

### भोले बाबा के 6 सेवादार गिरफ्तार, सत्संग के आयोजक पर 1 लाख का इनाम घोषित

**हाथरस/एजेंसी।** यूपी के हाथरस में हुए भगदड़ मामले में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए आयोजन समिति के छह सदस्यों को गिरफ्तार किया है। इनमें चार पुरुष और दो महिलाएं शामिल हैं। इनकी पहचान राम लड़ैते, उपेंद्र सिंह, मेघ सिंह, मुकेश कुमार, मंजू यादव और मंजू देवी के रूप में हुई है। पुलिस की पूछताछ में पता चला कि यह लोग आयोजन समिति से जुड़े थे। इन्होंने इससे पहले भी कई कार्यक्रमों का आयोजन करवाया है। इन लोगों का काम पंडाल की व्यवस्था और लोगों को एकत्रित करना था। यूपी पुलिस ने मुख्य आयोजक वेद प्रकाश मधुकर के ऊपर एक लाख रुपए का इनाम घोषित किया था। अब, वेद प्रकाश मधुकर के खिलाफ एनबीडब्ल्यू का नोटिस जारी कराया जा रहा है। वहीं, सभी की गिरफ्तारी पर अलीगढ़ रेंज के आईजी शलभ माथुर ने कहा, सभी से हम लगातार पूछताछ कर रहे हैं। पूछताछ में कई तरह की परतें खुलकर सामने आ रही हैं। जैसे-जैस विवेचना आगे बढ़ेगी, तो वस्तुस्थिति स्पष्ट होगी कि आखिर मामले की सच्चाई क्या है? इसके बाद विवेचना अधिकारी तय करेगा कि इस मामले में किसकी क्या भूमिका है। दूसरी तरफ भोले बाबा की गिरफ्तारी कब तक होगी, यह सवाल पूछे जाने पर आईजी शलभ माथुर ने कहा, आगे किसकी गिरफ्तारी होती है और किसकी नहीं? यह विवेचना पर निर्भर करेगा। आगे विधिवत जांच की जाएगी।

**विक्ट्री परेड : टीम इंडिया के स्वागत के लिए मरीन ड्राइव पर उमड़ा जनसैलाब, एक झलक पाने को बेताब दिखे लोग**

## विश्व विजेता का मुंबईवासियों ने किया भव्य स्वागत

● **वानखेड़े स्टेडियम तक क्रिकेट फैंस की लगी भारी भीड़**

एजेंसी

**मुंबई।** दिल्ली में जोरदार स्वागत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने के बाद भारतीय खिलाड़ी शाम में मुंबई पहुंचे। मुंबई पहुंचने पर टीम इंडिया का ग्रैंड वेलकम किया गया। मुंबई एयरपोर्ट पर जब टीम इंडिया का विमान उतरा तो खास तरीके से स्वागत किया गया। खिलाड़ियों के उतरने से पहले विमान को वाटर सैल्यूट दिया

गया। भारतीय खिलाड़ियों के स्वागत में विमान के दोनों तरफ दमकल की दो गाड़ियां पानी की बौछार की।

भारतीय टीम के खिलाड़ियों ने मुंबई में रोड शो किया। रोड शो मरीन ड्राइव से वानखेड़े स्टेडियम तक किया गया। खिलाड़ियों की एक झलक पाने के लिए मरीन ड्राइव में जनसैलाब उमड़ पड़ा। भारी संख्या में लोग वहां पहुंचे और खिलाड़ियों को देखने के लिए बेताब नजर आये। यही नजारा वानखेड़े स्टेडियम का भी है। वहां भी भारी संख्या में भारतीय समर्थक मौजूद थे। स्टेडियम का नजारा ऐसा था, मानो वहां कोई अंतरराष्ट्रीय मैच खेला जाना हो।

### भारतीय क्रिकेट टीम ने प्रधानमंत्री से की मुलाकात

नई दिल्ली। विश्व कप टी20 विजेता भारतीय क्रिकेट टीम ने गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। विजेता भारतीय खिलाड़ियों की यह मुलाकात प्रधानमंत्री के आधिकारिक आवास में हुई। मुलाकात के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने विश्व विजेता टीम से उनके अनुभवों को सुना। सोशल मीडिया पर जारी फोटो में प्रधानमंत्री मोदी ट्रॉफी पकड़ने की बजाय टीम के कप्तान रोहित शर्मा और कोच राहुल द्रविड़ का हाथ थामे नजर आए। वहीं बीसीसीआई अध्यक्ष रोजर बिन्नी और सचिव जय शाह ने प्रधानमंत्री मोदी को टीम इंडिया के रंग वाली 'नमो 1' जर्सी भी भेंट की। मुलाकात के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर खिलाड़ियों के साथ बातचीत की तस्वीरें साझा करते हुए पोस्ट किया, 'हमारे चैंपियंस के साथ एक बेहतरीन मुलाकात। 7, लोक कल्याण मार्ग में विश्व कप विजेता टीम की मेजबानी की और टूर्नामेंट के दौरान उनके अनुभवों पर एक यादगार बातचीत की।' बीती 29 जून को दक्षिण अफ्रीका के बारबाडोस में टी20 विश्व कप जीतने के बाद टीम इंडिया आज सुबह दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर पहुंची। इसके बाद खिलाड़ियों का आईजीआई एयरपोर्ट, आईटीसी मौर्य होटल और होटल के रास्ते में जोरदार स्वागत किया गया। प्रधानमंत्री से मुलाकात के बाद टीम इंडिया मुंबई के लिए रवाना हो गई।

# राहुल ने हिन्दू समाज पर लांछन लगा किया पाप!

जब कोई व्यक्ति अपने पूर्वजों के बारे में लज्जित होने लगे तब समझ लो कि उसका अंत आ गया। सबको अपने पूर्वजों पर गर्व होना ही चाहिए। हिन्दू तो उन महान ऋषियों के वंशज हैं जो संसार में अद्वितीय रहे हैं। इसलिए उन्हें हिन्दू होने का गर्व है और होना भी चाहिए। सम्पूर्ण विश्व पर हिन्दू समाज का महान ऋण है। संपूर्ण विश्व में हिन्दू ही ऐसे हैं जिन्होंने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया। हम दुनिया में शांति व सौहार्द का संदेश लेकर गए। हमने किसी को अपना गुलाम नहीं बनाया। दुनिया की पीड़ित मानवता को हिन्दुओं ने ही गले लगाया। ऐसे सर्व भवन्तु सुखिनाः सर्वे सन्तु निरामयः और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना रखने वाले हिन्दू समाज को हिंसक बताया जा रहा है। हिन्दू समाज भी इतना उदार व सहनशील है कि वह भी अपने ऊपर लगने वाले आरोपों को सहन करता जा रहा है। यह स्थिति वास्तव में हिन्दू समाज के लिए आत्मघाती है।

स्वामी विवेकानंद कहते थे कि तभी तुम हिन्दू कहलाने के अधिकारी हो जब इस नाम को सुनते ही तुम्हारी रगों में शक्ति की विद्युत तरंग दौड़ जाए। हम अहिंसा के पुजारी जरूर हैं, लेकिन हमारे शास्त्रों का यह भी आदेश है कि यदि कोई तुम्हारे गाल पर थप्पड़ मारे और तुम उसका जवाब दस थप्पड़ों से न दो तो तुम पाप करते हो। हिन्दुस्थान का प्राण हिन्दू धर्म है। यदि हिन्दू धर्म पर आघात होगा तो वह राष्ट्र पर आघात माना जाएगा। इसलिए हिन्दुओं को अपने शौर्य को प्रकट करने की जरूरत है। राहुल गांधी का नेता प्रतिपक्ष के तौर पर पहला भाषण झूठ, निराशा और तथ्यहीन बातों से भरा हुआ है। राहुल गांधी ने अपने भाषण में न केवल संसदीय गरिमा को तार-तार किया बल्कि हिंदुओं को हिंसक, नफरती और झूठा बताकर हिन्दू समाज को अपमानित करने का काम किया है। इसकी जितनी भी निंदा की जाए, कम है। इस कृत्य के लिए राहुल गांधी को अविलंब माफी मांगनी चाहिए। वैसे इसके लिए राहुल गांधी को दोष देना ठीक नहीं है, क्योंकि उनको यही संस्कार ही मिला है। भारत की प्रकृति और संस्कृति का उन्हें ज्ञान नहीं है। राहुल गांधी के पास स्वयं की चिंतन प्रतिभा कुछ है नहीं। कम्युनिस्ट व मैकाले पुत्रों की बुद्धि के आधार पर वह बोलते व आचरण करते हैं। कांग्रेस की संस्कृति शुरू से विघटनकारी रही है। वह हमेशा समाज को बांटने में विश्वास करती है। कांग्रेस कई बार टूटी। कई दल बने लेकिन उनका मूल स्वभाव यथावत है।

भारत विभाजन से लेकर आज तक कांग्रेस की कार्य संस्कृति में बदलाव नहीं आया है। महात्मा गांधी की चलती तो कांग्रेस समाप्त हो गई होती। लेकिन गांधी के नाम का उपयोग करने वाले राहुल गांधी महात्मा गांधी का भी अपमान कर रहे हैं, जिन्होंने कहा था हिन्दुत्व सत्य की अनवरत खोज का ही दूसरा नाम है। 24 जनवरी 1948 को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि हमें अपनी उस विरासत और अपने उन पूर्वजों पर गर्व है जिन्होंने भारत को बौद्धिक एवं सांस्कृतिक श्रेष्ठता प्रदान की। वैसे हिन्दुओं पर आक्षेप लगाना कांग्रेस की पुरानी आदत है। सदन में राहुल गांधी ने स्पष्ट कहा है कि जो लोग अपने आपको हिंदू कहते हैं वो 24 घंटे हिंसा-हिंसा-हिंसा, नफरत-नफरत-नफरत, असत्य-असत्य-असत्य की बात करते हैं। इससे राहुल गांधी की मंशा जाहिर होती है। जबकि सच्चाई सबको पता है कि 1984 में सिखों का नरसंहार किसने किया था। 1975 में आपातकाल किसने लगाया था। सच्चाई ये है कि संतों पर गोलियां किसने चलवाई थीं? 2010 में तत्कालीन गृहमंत्री पी चिदंबरम ने हिंदुओं को आतंकवादी कहा था। 2013 में पूर्व गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे ने भी हिंदुओं को आतंकवादी बताया था। 2021 में राहुल गांधी ने हिन्दुत्ववादियों को देश से बाहर निकालने को कहा था और आज सम्पूर्ण हिन्दुओं को असत्यवादी और हिंसक कहा।

राहुल गांधी ने पहले भी कहा था कि मंदिर जाने वाले लड़कियों को छेड़ते हैं। संसद की बहस के दौरान ईश्वर के चित्रों को सामने रखना और राजनीति को इससे जोड़ना एक नेता प्रतिपक्ष को शोभा नहीं देता। हिन्दू संस्कृति विजय की उपासक है, पराजय की नहीं। हमारे यहां किसी धर्म संस्थापक को फांसी देने का उदाहरण नहीं है। क्या हमारे प्रभु श्रीरामचन्द्र जी या योगेश्वर श्रीकृष्ण का पराभव किसी ने देखा या सुना है। जिनकी हम पूजा करते हैं वह कभी पराभूत नहीं हुए। यह हिन्दू धर्म पर आक्षेप है। इसे सहन नहीं करेंगे बल्कि अपने धर्म की रक्षा के लिए डट जाने का समय है। धर्म के प्रति हमारे हिन्दू भाइयों की श्रद्धा कहां चली गई। संसद में खड़े होकर राहुल गांधी हिन्दू धर्म को हिंसक कहते रहे और हमारे सांसदों ने उन्हें बोलने दिया। वहीं दूसरे दिन जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भाषण करने खड़े हुए तो पूरे भाषण के दौरान विपक्षी सांसदों ने हंगामा किया। विपक्ष की यह संस्कृति किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए ठीक नहीं है। अगर अभी हम नहीं चेते तो आगे आने वाला समय और भयावह होने वाला है। हिन्दू शांतिप्रिय है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह चुपचाप गाली सहन करता रहेगा। सहने की भी एक सीमा होती है। हिन्दुओं ने हिंसा फैलाने का काम कभी किया ही नहीं। हिन्दू समाज जिस दिन हिंसक हो जाएगा उस दिन भारत में राहुल गांधी जैसे दोगले नेताओं को पैर रखने की भी जगह नहीं मिलेगी। अनेक आपत्ति-विपत्ति को सहकर भी हिन्दू आज भी जीवित है। भगिनी निवेदिता ने कहा कि हिन्दू धर्म एक ऐसे समाज का धर्म है जो कभी बर्बर नहीं बना। ज्ञान एवं शिक्षा के साथ कभी विरोध नहीं रहा। यदि नेता का आचरण और व्यवहार ठीक नहीं है तो उसे स्वीकार्यता नहीं मिल सकती। नेता की विशेषता होती है कि वह भिन्न मत रुचि व विचार और प्रवृत्ति के लोगों को उनकी भावनाओं के आधार पर एकत्र रख सके। वह व्यक्ति नेता कभी नहीं बन सकता जिसके मन में हिन्दुओं के प्रति ईर्ष्या है।

अगर हिन्दू समाज हिंसक होता तो राहुल गांधी जैसे नेता हिन्दुओं को हिंसक बोलने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाते। यह हिन्दुओं को उत्तेजित करने और समाज को बांटने का प्रयास है। हिन्दू समाज उनके मंसूबों से वाकिफ है। हम सब एक हैं। सभी हिन्दू भाई-भाई हैं। वैसे राहुल गांधी के इस बयान से यह स्पष्ट हो गया है कि वह विपक्ष के नेता बनने की काबिलीयत नहीं रखते। बात शांति से नहीं बनी तो कुरुक्षेत्र भी झेला है। शिव हैं हम लेकिन शंकर बन, रौद्र रूप भी धारा है। जिन्हें भारत की एकता अखंडता व समृद्धि नहीं सुहाती। वह हमारी राष्ट्रीय एकता और आपसी सद्भाव बिगाड़ने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार का कृत्य स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविन्द व लोकमान्य तिलक का अपमान है। धर्म आधारित राजनीति का ही भारत में सम्मान था। निष्ठाहीन राजनीति समाज का भला नहीं कर सकती। कांग्रेस के नेता भारत माता की जय और वंदे मातरम बोलने से भी परहेज करते हैं। भूमि को माता के समान देखने की दृष्टि हमें वेदों से मिली है। जिन्होंने कहा माता भूमि पुत्रोहम पृथिव्या:।

# गांवों से पलायन और बढ़ते शहरीकरण के खतरे



ललित गर्ग

भारत में बढ़ता शहरीकरण भले ही विकास का आधार हो, लेकिन इसने अनेक समस्याओं को भी जन्म दिया है। बढ़ता शहरीकरण केवल भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के लिये एक बड़ी चुनौती बन रहा है। वर्तमान में दुनिया की कुल आबादी में से 56 फीसदी आबादी शहरों में रहने लगी है। गांवों से शहरों की ओर पलायन हो रहा है। यह प्रवृत्ति जारी रही तो 2050 तक शहरी आबादी अपने वर्तमान आकार से दोगुनी से भी अधिक हो जाएगी। भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनाने एवं नया भारत-विकसित भारत बनाने के लिये शहरीकरण पर बल दिया जा रहा है। एक विडम्बनापूर्ण सोच देश के विकास के साथ जुड़ गयी है कि जैसे-जैसे देश विकसित होता जायेगा वैसे-वैसे गांव की संरचना टूटती जायेगी। निश्चित ही जब भी शहरों में कोई नई कॉलोनी विकसित होती है तो हमें यह स्वीकारना ही होगा कि किसी न किसी गांव की कुर्बानी हुई है। एक और विडम्बना एवं त्रासदी है कि जिन्हें शहर कहा जा रहा है वहां अपने संसाधना से वंचित लोगों की बेतरतीब, बेचैन और विस्थापित भीड़ ही होगी। कुछ समय पूर्व स्विट्ज़रलैंड के दावोस में विश्व आर्थिक मंच का सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें यह बात उभर कर सामने आई कि शहरों के विकास को ही भारत के विकास की धुरी माना जा रहा है। यह सही भी है क्योंकि किसी भी आधुनिक और विकासशील अर्थव्यवस्था में शहरों को विकास का सबसे बड़ा वाहक माना जाता है। भारत में नवीन भारत की पहल के विचार को आगे बढ़ाने की कड़ी में शहरी बुनियादी ढाँचों में सुधार के समग्र दृष्टिकोण को अपनाये जाने की अपेक्षा है। वैश्वीकरण के उपरांत शहरी विकास की अवधारणा समावेशी विकास की एक अनिवार्य शर्त बन गई है। शहरी विकास की इस प्रक्रिया ने गाँवों के सामने अस्तित्व का संकट उत्पन्न कर दिया है। शहरों का अनियोजित विकास, महानगरों का असुरक्षित परिवेश, पर्यावरण की समस्या, बढ़ता प्रदूषण, जल का अभाव एवं शहरी संस्कृति में बढ़ते जा रहे संबंधमूलक तनाव हमें यह सोचने पर विवश करते हैं कि शहरी विकास की अवधारणा पर एक बार फिर से विचार किया जाना चाहिये। विभिन्न प्रकार के प्रदूषण उत्पन्न करने में गाँवों की तुलना में शहरों की भूमिका अधिक है, तो क्या यह कहा जा सकता है कि विकास और प्रदूषण का एक-दूसरे के साथ सकारात्मक संबंध है? बेहतर रोजगार, आधुनिक जनसुविधाएं और उज्ज्वल भविष्य की लालसा में अपने पुश्तैनी घर-बार छोड़कर शहर की चकाचौंध की ओर पलायन करने की बढ़ती प्रवृत्ति का परिणाम है कि देश में एक लाख से अधिक आबादी वाले शहरों की संख्या लगभग 350 हो गई है जबकि 1971 में ऐसे शहर मात्र 151 थे। यही हाल दस लाख से अधिक आबादी वाले शहरों का है। इसमें



कोई दो राय नहीं कि शहरीकरण को विकास का पैमाना माना जाता है। शहरों में गांवों की तुलना में अधिक साधन, सुविधाएं, रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा दूसरे शब्दों में आधारभूत सुविधाएं अधिक होती हैं। यह भी सच है कि ये सुविधाएं सभी को नसीब भी नहीं होतीं। रोजगार के लिए गांवों से शहरों में आने वाले बहुत सारे लोगों को कच्ची बस्तियों, चालों या एक से दो कमरें के मकानों में किराए पर रहने को बाध्य होना पड़ता है। शहरों में बुनियादी सुविधाओं के बावजूद सामाजिक और पर्यावरणीय क्षेत्र पर खासा नकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है। शहरों में रहना दूभर ही होता जा रहा है। असल में देखें तो संकट वायु प्रदूषण का हो या जंगल का, स्वच्छ वायु का हो या फिर स्वच्छ जल का, सभी के मूल में विकास की वह अवधारणा है जिससे शहर रूपी सुरसा सतत विस्तार कर रही है और उसकी चपेट में आ रही है प्रकृति और उसकी नैसर्गिकता। जिसके कारण मनुष्य की सांसें उलझती जा रही है, जीवन पर संकट मंडरा रहा है। अगर हमें पूरी समस्या से लड़ना है, तो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सहित महानगरों के स्तर पर और साथ ही पूरे देश के स्तर पर अपनी कई आदतों को बदलना होगा, विकास के तथाकथित मॉडल पर गंभीर चिन्तन करना होगा। वायु प्रदूषण का कारण पराली एवं सड़क पर दौड़ते निजी वाहनों में खोजने की बजाय हमें महानगरों के अनियोजित शहरीकरण में खोजना होगा।

पर्यावरण सुरक्षा के मद्देनज़र शहर एक बड़ी चुनौती बन रहे हैं क्योंकि शहर के विकास के लिये हरित क्षेत्र की बलि चढ़ाई जा रही है। जलवायु संबंधी परिवर्तनों ने कई शहरों के अस्तित्व को चुनौती दी है, विशेषतः समुद्र किनारे बसे शहर अब मानव निर्मित आपदाओं से अछूते नहीं रह गए हैं। इसके अलावा, तीव्र प्रौद्योगिकीय विकास शहरों में अनेक परंपरागत व्यवसाय करने वाले समूहों के लिये खतरा बन गया है क्योंकि इससे भी पर्यावरण को नुकसान होता है। देश के सभी बड़े शहरों और महानगरों में बड़ी संख्या में स्लम बस्तियाँ बन गई हैं। इनमें रहने वाले लोग शहरी जनसंख्या से संबंधित उच्च एवं मध्य वर्ग की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, परंतु वे न केवल गरीबी के शिकार हैं अपितु बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित हैं। प्रत्येक शहर में बेतरतीब यातायात एक गंभीर समस्या बन गया है क्योंकि सार्वजनिक परिवहन सेवाओं को लगभग समाप्त कर दिया गया है। शहर में रहने वाले समृद्ध लोग अपनी शक्ति और संपन्नता के प्रदर्शन के लिये यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं और इससे बड़ी संख्या में सड़क हादसे होते हैं।

शहर के लिए सड़क चाहिए, बिजली चाहिए, जल चाहिए, मकान चाहिए और दफ्तर चाहिए। इन सबके लिए या तो खेत होम हो रहे हैं या फिर जंगल। जंगल को हजम करने की चाल में पेड़, जंगली जानवर, पारंपरिक जल स्रोत सभी कुछ नष्ट हो रहा है। यह वह नुकसान है जिसका हर्जाना संभव नहीं है और यही वायु प्रदूषण का बड़ा कारण है। शहरीकरण यानी रफ्तार और रफ्तार का मतलब है वाहन और वाहन है कि विदेशी मुद्रा भंडार से खरीदे गए ईंधन को पी रहे हैं और बदले में दे रहे हैं दूषित वायु। शहर को ज्यादा बिजली चाहिए यानी ज्यादा कोयला जलेगा, ज्यादा परमाणु संयंत्र लगेंगे। शहर का मतलब है औद्योगिकीकरण और अनियोजित कारखानों की स्थापना, जिसका परिणाम है कि हमारी लगभग सभी नदियां अब जहरीली हो चुकी है। महानगरों की बढ़ती आबादी को सिर छुपाने को मकान चाहिए, जिसके लिये हरीतिमा क्षेत्रों को हम कंक्रीट के जंगल में तब्दील करते जा रहे हैं। नदी थी खेती के लिए, मछली के लिए, दैनिक कार्यों के लिए, न कि उसमें गंदगी बहाने के लिए। गांवों के कस्बें, कस्बों के शहर और शहरों के महानगर में बदलने की होड, एक ऐसी मृग मरीचिका में लगी है, जिसकी असलियत कुछ देर से खुलती है लेकिन जब खुलती है तब तक लोगों की सांस लेना दुभर हो चुका होता है, जीवन पर संकट के बादल मंडराने लगते हैं।

दरअसल स्वतन्त्र भारत के विकास के लिए हमने जिन नक्शे कदमों पर चलना शुरू किया उसके तहत बड़े-बड़े शहर पूंजी केन्द्रित होते चले गये और रोजगार के स्रोत भी ये शहर ही बने। शहरों में सतत एवं तीव्र विकास और धन का केन्द्रीकरण होने की वजह से इनका बेतरतीब एवं असंतुलित विकास स्वाभाविक रूप से इस प्रकार हुआ कि यह राजनीतिक दलों के अस्तित्व और प्रभाव से जुड़ता चला गया, लेकिन पर्यावरण एवं प्रकृति से कटता गया। प्रबुद्ध नागरिक बढ़ते शहरीकरण को लेकर चिंतित रहते हैं और अनियोजित शहरी विकास को नियोजित विकास का रूप दिलाने के लिए न्यायालयों तक का दरवाजा खटखटाते हैं। इसके बावजूद अनियोजित शहरीकरण बढ़ रहा है। शहरीकरण के दुष्प्रभाव हमारे सामने आने लगे हैं। ऐसे में नीति निर्माताओं को इस समस्या पर गंभीरता से विचार करना होगा। शहरों के विस्तार की बजाय गांवों-कस्बों के विकास पर ध्यान देना होगा। गांव आधारित आर्थिक विकास एवं आर्थिक व्यवस्था को प्रोत्साहन देना होगा। वहां रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य की बेहतर व्यवस्था करके ग्रामीण आबादी को शहरों की ओर पलायन से रोका जा सकता है। इससे शहरों पर दबाव भी कम होगा और पर्यावरण, स्वास्थ्य, जीवनशैली पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव में भी कुछ हद तक कमी आएगी।

# राहुल गांधी का झूठ पकड़ा गया, मोदी राज में बढ़ रही सेना की ताकत



डॉ. मयंक चतुर्वेदी

सेना को लेकर भ्रम फैलाते हुए अग्निवीर योजना पर राहुल गांधी ने जो झूठा नैरेटिव शहीद के सम्मान और मिलनेवाली राशि को लेकर रचा, उसका सच अब दुनिया के सामने है। दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कही यह बात भी पूरी तरह से सत्य साबित हो गई कि कांग्रेस का अपना एक इकोसिस्टम है, जिसके लिए देश से ऊपर सिर्फ उसका अपना हित है, यदि भारत का नुकसान होता है तो उससे कांग्रेस को कोई फर्क नहीं पड़ता। इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी ने सुप्रीम कोर्ट की तरफ से जताई गई चिंताओं का हवाला तक सदन में दिया, जिसके बाद कहना होगा कि राहुल गांधी के संसद में नेता प्रतिपक्ष होने के बाद भी बोले गए झूठ से यह साफ हो गया है कि कांग्रेस अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी भी हद तक जा सकती है।

यहां जिस परिवार और अग्निवीर की शहीदी को आधार बनाकर राहुल गांधी, सदन में प्रधानमंत्री मोदी एवं एनडीए सरकार से प्रश्न पूछ रहे थे, वे सभी प्रश्न उस परिवार के साथ सेना से आए स्पष्टीकरण के बाद पूरी तरह से असत्य साबित हुए हैं। लोकसभा की कार्यवाही के दौरान यह सभी ने देखा भी कि किस तरह से राहुल, केंद्रीयमंत्री राजनाथ सिंह को झूठा ठहरा रहे थे। राहुल का यह आरोप बहुत साफ था कि रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने 'अग्निवीर' के जान गंवाने पर उनके परिवार को आर्थिक मदद मिलने के बारे में संसद के भीतर झूठ बोला है, इसलिए रक्षामंत्री को संसद, देश और सेना से माफी मांगनी चाहिए। जिसके तुरंत बाद रक्षामंत्री राजनाथ सिंह का जवाब भी सामने आया, उन्होंने साफ शब्दों में बताया, सीमाओं की रक्षा करते हुए या युद्ध के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले अग्निवीर के परिवार को एक करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता दी जाती है। वहीं, जिस अग्निवीर की बात राहुल कर रहे थे, उसके परिवार ने भी स्वीकार्य किया है कि उन्हें राशि मिल चुकी है, अभी और मिलेगी।

रक्षा मंत्रालय के एकीकृत रक्षा स्टाफ मुख्यालय के अतिरिक्त लोक सूचना महानिदेशालय का कहना भी यही है, "कुल देय राशि में से, अग्निवीर अजय के परिवार को पहले ही 98.39 लाख रुपये का भुगतान किया जा चुका है। अग्निवीर योजना के प्रावधानों के अनुसार लागू लगभग 67 लाख रुपये की अनुग्रह राशि और अन्य लाभ, पुलिस सत्यापन के बाद अंतिम खाता निपटान पर भुगतान किए जाएंगे। देय कुल राशि लगभग 1.65 करोड़ रुपये होगी।" अतः यहां इससे एक बात तो साफ हो गई कि राहुल गांधी अपने फायदे के लिए झूठ की राजनीति कर रहे हैं, सिर्फ कहने भर के लिए वह संविधान को हाथ में उठाए घूमते हैं और समानता की दुहाई देते हैं। किंतु वास्तव में ऐसा है नहीं। प्रधानमंत्री मोदी इसलिए आज कांग्रेस से पूछ भी रहे हैं कि वह ऐसा किसके फायदे के लिए कर रही है ? जबकि उनकी सरकार भारतीय सेना को युद्ध के लिए सशक्त बनाने में जुटी है। सीडीएस (प्रमुख सेना अध्यक्ष) के पद के सृजन के बाद तीनों सेना में समन्वय मजबूत हुआ है और थियेटर (मोर्चा) कमान की दिशा में भी काम हो रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी का यह कहना भी सही है, "इंदिरा गांधी की सरकार ने सेना एक रैंक एक पेंशन प्रणाली को समाप्त किया था। दशकों तक कांग्रेस ने ऊसे फिर से लागू होने नहीं दिया, एक बार तो चुनाव से पहले कांग्रेस के नेतृत्ववाली सरकार ने 500 रुपये दिखाकर सेना के कमांडरों को बेवकूफ बनाने का प्रयास किया था, जबकि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने सत्ता में आने के बाद एक रैंक एक पेंशन की प्रणाली को फिर से लागू कर दिया। यह कांग्रेस ही है जो राफेल विमानों की खरीद का विरोध कर रही थी। कांग्रेस सरकार में लड़ाकू विमान नहीं खरीदे गए, जब हमने खरीदने की कोशिश की, तो कांग्रेस हर तरह की साजिश करने पर उतर आयी। वास्तव में रक्षा सुधारों के प्रयासों को कमजोर करने का यह षड्यंत्र है।" प्रधानमंत्री मोदी याद दिलाते हैं, " वह भी वक्त था, जब कांग्रेस के जमाने में हमारी सेनाओं के पास बुलेटप्रूफ जैकेट भी नहीं होते थे। " सवाल यह है कि कांग्रेस ऐसा किसके फायदे के लिए कर रही है। अग्निवीर योजना को मुद्दा बनाने को लेकर कांग्रेस पर सेना का मनोबल तोड़ने का प्रयास करने का आरोप भी प्रधानमंत्री मोदी का है । बहुत हद तक प्रधामंत्री नरेन्द्र मोदी के इस आरोप में दम है, क्योंकि जिस प्रकार का नैरेटिव कांग्रेस गढ़ रही है उसका मूल उद्देश्य यही है कि देश के नौजवान सेना में न जाएं। किंतु देश देख रहा है, कि कैसे मोदी राज में भारतीय सेनाएं हर मोर्चे पर अधिक सशक्त हुई हैं। स्वयं अमेरिका की गुप्त रिपोर्ट में भी यही दावा किया गया है। यह रिपोर्ट कहती है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में भारत विश्व में लगातार अपनी धमक बना रहा है। अमेरिकी रक्षा मंत्रालय के शीर्ष खुफिया एजेंसी में अधिकारी निदेशक लेफ्टिनेंट जनरल जेफरी क्रूस ने अमेरिकी संसद को बताया भी कि कैसे भारतीय सेना लगातार अपनी ताकत बढ़ा रही है।

अमेरिका के इस बड़े अधिकारी ने सशस्त्र सेवा समिति और खुफिया उपसमिति के सदस्यों को यह जानकारी दी है कि भारत ने जी-20 के आर्थिक शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर खुद को एक वैश्विक अगुआ के रूप में प्रदर्शित किया है और पूरे हिंद प्रशांत क्षेत्र में पीआरसी (पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना) की गतिविधि का मुकाबला करने के लिए स्वयं को सक्षम साबित किया है। भारत ने प्रशिक्षण और रक्षा बिक्री के माध्यम से फिलीपीन जैसे क्षेत्रीय दक्षिण चीन सागर दावेदारों के साथ हिंद प्रशांत क्षेत्र में उन्नत साझेदारी की है। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस व जापान के साथ अपने सहयोग को और मजबूत किया है। भारत ने चीन से प्रतिस्पर्धा करने और रूसी उपकरणों पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए अपनी सेना को आधुनिक बनाने के लिए कई कदम उठाए। भारत ने स्वदेशी विमानवाहक पोत का समुद्री परीक्षण किया और प्रमुख रक्षा प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण पर कई पश्चिमी देशों के साथ बातचीत भी की है और इसके लिए सबसे आवश्यक रक्षा बजट में भारी बढ़ोत्तरी की है। जो यह बताने के लिए पर्याप्त है कि वास्तव में मोदी सरकार के रहते सेना को हर तरीके से मजबूती प्रदान करने में जिस धन का सबसे अधिक उपयोग होना है, यदि उसकी कमी नहीं रहेगी तो सेना हर मोर्चे पर अपने को सशक्त रूप से साबित करती रहेगी, जोकि वह आज कर पा रही है।

# सिर चढ़कर बोल रही राहुल गांधी की अपरिपक्वता!



मनोज कुमार अग्रवाल

बिकांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बहुत विवादित बयान दिया है। ऐसा बयान जो करोड़ों हिंदुओं की भावना को आहत करने वाला है। उन्होंने कहा कि जो लोग अपने आपको हिंदू कहते हैं, वो चौबीसों घंटे हिंसा, हिंसा, हिंसा; नफरत, नफरत, नफरत; असत्य, असत्य, असत्य। राहुल के इस बयान पर लोकसभा में भारी हंगामा हो गया। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खड़े होकर राहुल के इस विचार पर आपत्ति जताई।

अठारहवीं लोकसभा में मिली सफलता से विपक्ष जितना उत्साह में है, उससे कहीं अधिक खुमार में हैं लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष चुने गए कांग्रेस सांसद राहुल गांधी। यह सरकार पर दबाव बनाने का हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। दबाव भी हर मामले में। इसी क्रम में सोमवार को उन्होंने लोकसभा में जो कहा, उससे ऐसा संदेश गया कि वह जोश में वह होश खोने लगे हैं और उनकी भाषा में संयत गंभीरता व जिम्मेदाराना भाव का नितांत अभाव है। अपने पहले संबोधन के दौरान राहुल ने ऐसा कुछ कह डाला 'जो लोग अपने आप को हिन्दू कहते हैं, वो 24 घंटे हिंसा के नफरत की बात करते हैं। राहुल गांधी का यह कथन देश भर में हिन्दू समाज को नागवार लगा है। इस का स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रतिवाद किया और कहा कि पूरे हिन्दू समाज को हिंसक कहना गंभीर मुद्दा है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भी राहुल से माफी मांगने की मांग की। दरअसल, राहुल भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर हमला करना चाहते थे, लेकिन उन्होंने हर उस भारतीय पर टिप्पणी कर डाली जो स्वयं को गर्व से हिन्दू कहता है। वह अगर यहीं टिप्पणी भाजपा-संघ का नाम लेकर करते तो उचित होता। हालांकि, प्रधानमंत्री के प्रतिवाद के बाद राहुल बचाव की मुद्रा में आ गए और कहा कि वह भाजपा की बात कर रहे हैं।

राहुल ने अपने बयान में एक और गड़बड़ी की। भगवान शिव की छवि दिखाते हुए कहा कि 'शिवजी कहते हैं डरो मत, डराओ मत। वह अहिंसा की बात करते हैं।' लेकिन शिव ने ऐसा कहा हो, कहीं संदर्भ नहीं मिलता। यह दर्शाता है कि राहुल संसद में भी चुनावी भाषणों की तरह वाहवाही लूटने के लिए कुछ भी बोल रहे हैं। चुनावी भाषण देने और संसद में बोलने में बहुत अंतर होता है, यह बात राहुल को ध्यान में रखनी चाहिए।

जब उन्होंने 'अहिंसा' की बात की तो गृहमंत्री शाह ने राहुल पर पलटवार करते हुए आपातकाल और 1984 के सिख विरोधी दंगों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने देश में आतंक फैलाया था और राहुल गांधी को अहिंसा की बात नहीं करनी चाहिए। शाह का संकेत 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राहुल के पिता राजीव गांधी द्वारा दिए गए बयान - 'बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती हिलती ही हैं' की ओर था। राजीव गांधी के इस बयान के बाद देशभर में सिख विरोधी दंगे हुए थे। कांग्रेस के कई बड़े नेता आज भी उन दंगों के केस लड़ रहे हैं, जिनमें सिखों के गले में टायर डालकर सरेआम जिंदा जला दिया गया था। दरअसल राहुल गांधी अब लोकसभा में विपक्ष के नेता जैसे अहम पद पर हैं अब उनको अपने शब्दों की गरिमा पर विचार रखते हुए बोलना चाहिए उन को यह समझना होगा कि वह लोकसभा में पूरे विपक्ष का नेतृत्व कर रहे हैं। उनके एक-एक शब्द का महत्व है, एक-एक भावार्थ निकाला जाएगा। वह कांग्रेस अध्यक्ष जैसी बड़ी भूमिका पाने बाद



भी नाकाम रहे , ऐसे में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका मिली है इस को अच्छी तरह निभाकर वह अपने ऊपर लगे अफसलता के ठप्पे को हल्का कर सकते हैं।

हालांकि यह भी गौर तलब है कि राहुल को क्या बोलना है इस को तैयार करने के लिए पूरी एक टीम है राहुल जो बोलते हैं, वह उनका भाषण लिखकर देने वाले पर निर्भर करता है। या तो राहुल का भाषण लिखने वाले लोग पूरा अध्ययन किए बिना भाषण लिख रहे हैं या फिर राहुल खुद उसमें अपनी मर्जी से हेर-फेर कर रहे हैं। ये दोनों ही स्थितियां नेता प्रतिपक्ष के पद पर बैठे व्यक्ति के लिए उचित नहीं हैं। राहुल का लोकसभा में पहला भाषण लोकसभा की गरिमा के अनुरूप नहीं हो कर एक चुनावी भाषण जैसा है। जाहिर है कि उन्हें खुद को प्रमाणित करने का अवसर मिला है, ऐसे में हर शब्द में, हर वाक्य में गंभीरता लाने की आवश्यकता है। यदि तथ्यहीन या आधारहीन बात कही जाएगी तो उसका मजाक ही उड़ेगा, उससे गंभीर छवि बनने से रही। संसद कोई हास्य-विनोद की जगह नहीं है,यह देश की सबसे अहम पंचायत है जहां देश को चलाने वाली नीतियां विपक्ष के सहयोग से तय और तैयार की जाती है । देश की जनता ने विपक्ष को अच्छी-खासी सीटें देकर राहुल को खुद को प्रमाणित करने का सुनहरा अवसर दिया है। वह केवल भाजपा-संघ पर हमला करके खुद को प्रमाणित नहीं कर पाएंगे, उन्हें नीतियां बनाने में अपना सकारात्मक सहयोग देना होगा। जहां गलत हो, वहां गलत कहने से कोई नहीं रोक रहा, लेकिन यदि गंभीर मामलों पर चर्चा के दौरान भी वह केवल मोदी-भाजपा पर हमले करेंगे तो उनकी खुद की छवि कैसी बनेगी, बताने की जरूरत नहीं है। अब राहुल गांधी को चुनावी मोड से बाहर आकर गंभीर नेता बनने का प्रयास करना चाहिए।

आपको बता दें कि हंगामे के बीच गृह मंत्री अमित शाह खड़े हुए और राहुल गांधी से माफी की मांग की। उन्होंने कहा, 'शोर-शराबा करके इतने बड़े वाकये को छिपाया नहीं जा सकता। विपक्ष के नेता राहुल ने कहा है कि जो अपने आप को हिन्दू कहते हैं, वो हिंसा करते हैं। मैं फिर से दोहराता हूं कि जो अपने आप को हिन्दू कहते हैं, वो हिंसा की बात करते हैं। हिंसा करते हैं। शाह ने कहा, 'इस देश में शायद इनको मालूम नहीं है कि करोड़ों लोग अपने आपको गर्व से हिन्दू कहते हैं। क्या वो सभी लोग हिंसा की बात करते हैं? हिंसा की भावना को किसी धर्म से जोड़ना ठीक नहीं। संवैधानिक पद पर बैठे राहुल गांधी से गुजारिश है कि माफी मांगें। इस्लाम में अभय मुद्रा पर विद्वानों और गुरुनानक पर एसजीपीसी से मत ले लें। अभय की बात करने का हक इनका नहीं है कि इमरजेंसी में पूरे देश को भयभीत किया। दिल्ली में दिन दहाड़े हजारों सिख भाइयों का कत्लेआम हुआ। ये अभय की बात कर रहे हैं। नेता विपक्ष को पहले भाषण में सदन के संग पूरे देश से माफी मांगनी चाहिए।'इससे पहले, लोकसभा में भगवान शिव की तस्वीर दिखाने से रोकने पर विपक्षी दल के नेता राहुल गांधी ने सवाल खड़ा कर दिया। उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से बार-बार पूछा कि क्या इस सदन में शिव जी का चित्र दिखाने से मनाही है? क्या इस सदन में शिव जी की तस्वीर नहीं दिखाई जा सकती है?

राहुल राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा में शामिल हुए और अपनी बातें भगवान शिव की तस्वीर दिखाकर ही शुरू की। इस पर अध्यक्ष ओम बिरला ने उन्हें सदन के नियमों का हवाला दिया। राहुल ने आगे कहा, 'जब भगवान शिव अपने गले में सांप लपेटते हैं तो वो कहते हैं कि वह हकीकत को स्वीकार करते हैं। उनकी बायीं हाथ की तरफ त्रिशूल है। त्रिशूल हिंसा का प्रतीक नहीं है बल्कि ये अहिंसा का प्रतीक है। अगर ये हिंसा का प्रतीक होता तो वह दायें हाथ में होता है।

कुल मिलाकर कर राहुल गांधी का व्यवहार उनके भाषण एक अपरिपक्वता भरे अजीब किस्म के असामान्य व्यवहार और उलाहना भरे असंसदीय आक्रोश का हवाला देते हैं देर सवेर उस विपक्ष को भी यह बात समझ में आ जाएगी जो अभी उन्हें अपना नेता मान कर पलकों पर बेठा रहा है देश के बहुसंख्यक वर्ग पर इतना आक्रामक टिप्पणी करना खुद मे शाब्दिक हिंसा है। यदि हिन्दू हिंसा और असत्य का हिमायती होता तो देश में हालात दूसरे होते। यह हिन्दू का अहिंसक सत्य परोपकार करूणा दया का स्वभाव है कि देश में सभी समुदाय अपनी धार्मिक स्वतंत्रता के साथ मिलजुल कर रहते हैं ऐसा पाकिस्तान या बांग्लादेश में नहीं है। राहुल गांधी के बयान के आपत्तिजनक अंशों को लोकसभा के रिकॉर्ड से हटाने की मांग की है लेकिन राहुल ने अपने बयान को सही ठहराया है और रिकार्ड में शामिल रखने की मांग की है। यदि राहुल से उनके भाषण में दिए कथन की सत्यता की पुष्टि करने के लिए लोकसभाध्यक्ष कहें तो वह अपने बयान की सत्यता की पुष्टि नहीं कर पाएंगे क्योंकि उन्होंने अयोध्या में मुआवजा नहीं देने की बात कही जबकि वहां करीब 1700 करोड़ मुआवजा दिया गया इसी तरह अगनिवीर के बलिदान को शहीद न मानने और आर्थिक मदद न देने पर भी तथ्य है कि सरकार एक करोड़ रुपये देती है। बेहतर होगा कि राहुल गांधी अपने हिन्दू समाज पर दिए बयान पर सार्वजनिक माफी मांगनी चाहिए। राहुल गांधी ने स्पष्ट तौर पर हिन्दुओं को आरोपित किया है बहुसंख्यक समाज इस को कतई स्वीकार नहीं करेगा।

**(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)**

### कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा के इस्तीफ़े से मचा हड़कंप, कहा- रघुकुल रीति सदा चली आई

# कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा का भजनलाल मंत्री मंडल से इस्तीफा

## किरोड़ी लाल मीणा ने मंत्री ने इस्तीफा देकर सियासत में उफान ला दिया, उप चुनावों में पड़ सकता है प्रतिकूल प्रभाव

चमकता राजस्थान

जयपुर। (खलील कुरैशी) राजस्थान के कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने मंत्रीपद से अपना इस्तीफा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को सौंप दिया है. मीणा की ओर से इसकी जानकारी दी गई है. खबर आ रही है कि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है जिसकी अटकलें पहले से लगाई जा रही थी. फिलहाल उनका इस्तीफा स्वीकार नहीं किया गया है. उन्हें मनाने की कोशिश की जा सकती है. बार बार हां और ना की कश्मकश के बीच आज इस्तीफा देकर मंत्री मीणा ने आखिर अपना वादा पूरा कर

ही दिया किरोड़ी लाल मीणा ने इस्तीफे की खबर के बीच सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया दी है. उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर लिखा-रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाई पर बचन न जाई. खबरों के अनुसार किरोड़ी लाल मीणा ने लोकसभा चुनाव के दौरान कहा था कि यदि बीजेपी दौसा लोकसभा सीट से हार जाती है तो वह इस्तीफा दे देंगे। किरोड़ी लाल मीणा का इस्तीफा स्वीकार हुआ, मीणा के विभागों का बटवारा किया।

### किरोड़ी लाल मीणा ने सरकार की अहम बैठकों से कर लिया था किनारा

सुत्रों से मिली खबरों की मानें तो किरोड़ी लाल मीणा ने प्रदेश की सरकार को अपना इस्तीफा 20 जून को ही सौंप दिया था. यही वजह थी कि सरकार की अहम बैठकों में वे नजर नहीं आ रहे थे लोकसभा चुनाव की आचार संहिता के दौरान मंत्रियों को सरकारी वाहन नहीं दिया गया था. आचार संहिता हटने के बाद सभी मंत्रियों ने सरकारी वाहन और अन्य सुविधाएं दोबारा ले ली थी, लेकिन मीणा ने न तो सरकारी वाहन का यूज किया और ना ही कोई सरकारी सुविधाएं ही ली. कृषि, ग्रामीण विकास, आपदा प्रबंधन एवं राहत मंत्री मीणा ने पहले ही कहा था- पीएम मोदी के दौसा आने से पहले मैंने कहा था कि यदि सीट (दौसा) नहीं जीती तो मैं मंत्री पद छोड़ दूंगा. बाद में प्रधानमंत्री ने मुझसे अलग से बात की और मुझे सात सीट की सूची दी. मैंने 11 सीट पर कड़ी मेहनत की. उन्होंने यह भी कहा था कि यदि पार्टी सात में से एक भी सीट हारती है तो मैं मंत्री पद छोड़ दूंगा और यहां पानी पिलाऊंगा, मीणा ने दौसा, भरतपुर, करौली-धौलपुर के अलावा अलवर, टोंक सवाईमाधोपुर और कोटा-बूंदी समेत पूर्वी राजस्थान की सीट पर प्रचार किया था. बीजेपी इनमें से भरतपुर, दौसा, टोंक-सवाईमाधोपुर और धौलपुर-करौली सीट कांग्रेस से हार गई।

### किरोड़ी लाल मीणा के इस्तीफे के बाद देवाराम ओटासी एवं के. के. विश्नोई को मिली जिम्मेदारी

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को किरोड़ी लाल मेणा ने मंत्री पद से अपना इस्तीफा दे दिया है वहीं अब किरोड़ी मीणा की जगह उनके विभाग की जिम्मेदारी ओटाराम देवासी और केके विश्नोई को दी गई है. भजनलाल सरकार में मीणा के पास कृषि, ब्रमीण विकास, आपदा प्रबंधन एवं राहत विभाग था. अब ओटाराम देवासी को ग्रामीण विकास विभाग और आपदा प्रबन्धन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग दिया गया है. केके विश्नोई को कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, जन अभियोग निराकरण विभाग, पंचायती राज विभाग दिया गया है. बता दें कि मीणा हाल ही में कैबिनेट की बैठक में शामिल नहीं हुए थे. इस पर उन्होंने कहा, जब मैंने इस्तीफा दे दिया तो नैतिक रूप से मैं वहां जा नहीं सकता. मुख्यमंत्री से मैं मिला था. उन्होंनेआदरपूर्वक कहा था कि आपका इस्तीफा स्वीकार नहीं करेंगे. मैंने मुख्यमंत्री से कहा कि चूंकि मैं जनता के बीच घोषणा कर चुका हूं कि अगर हम यह सीट (दौसा) नहीं जीते तो मैं इस्तीफा दे दूंगा, इसलिए मैंने ऐसा किया।

## संक्षिप्त समाचार

### जनप्रतिनिधि व अधिकारी एक दूसरे के पूरक सामंजस्य स्थापित कर करें जनसेवा : धनकड़

- पावटा पंचायत समिति सभागार में आयोजित हुई साधारण सभा की महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक

**पावटा (खलील कुरैशी)।** विराटनगर विधानसभा से भाजपा विधायक कुलदीप धनखड़ के मुख्य आतिथ्य एवं पावटा प्रधान पूजा चौधरी की अध्यक्षता में पावटा पंचायत समिति सभागार में गुरुवार को साधारण सभा की बैठक आयोजित हुई। बैठक में बिजली, सड़क, पानी के मुद्दे चर्चा में रहे। इस मौके पर लोगों द्वारा मिल रही निरन्तर शिकायत के बाद विधायक ने कार्य में लापरवाही बरतने वाले एक्सईएन जलदाय विभाग कोटपूतली को लताड़ लगाई। विधायक कुलदीप धनखड़ ने कहा कि अधिकारियों को पूरी जिम्मेदारी से कार्य करना चाहिए और जनप्रतिनिधि व अधिकारी एक दूसरे के पूरक होते है, इसलिए जनता से जुड़ा कोई कार्य रुकना नहीं चाहिए। बैठक में बताया कि ग्राम पंचायतों में पेयजल आपूर्ति हो सके, इसके लिए ग्राम पंचायतों को सीटी लाइन से जोड़ा जा रहा है। पंचायत समिति सदस्य धर्मपाल सरपंच विनोद सोभान ने बताया व कि आम रास्ता अतिक्रमण के चलते बंद पड़ा है। इस पर विधायक ने
उपखण्ड अधिकारी को जल्द से जल्द सुचारु करवाने करवाने के निर्देश दिए।पंचायत समिति सदस्य ओमवती मुखराम धनखड़, नरेन्द्र गुर्जर, धर्मपाल सहित अनेक सदस्यों ने बताया कि पंचायत समिति सदस्यों को केवल कोरम पूर्ति का साधन मात्र माना जाता है।

### मदरसा जामिया तैयबा में असली नायक शहीद अब्दुल हमीद जयंती मनाकर पेश की खिराज ए अकीदत

- जयंती के उपलक्ष्य में वीर शहीद अब्दुल हमीद खान की जीवनी पर डाला गया प्रकाश

**चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी)** मदरसा जामिया तैयबा के अंदर वीर शहीद अब्दुल हमीद की जयंती का कार्यक्रम रखा गया प्रोग्राम की शुरुआत कुरआने करीम की तिलावत से की गई मदरसा जामिया तैयबा के ही एक छात्र हाफिज मोहम्मद उस्मान ने कुरान ए करीम की तिलावत करी उसके बाद एक छात्रा आफरीन बानो ने शहीद अब्दुल हमीद की जिंदगी के ऊपर रोशनी डाली और कई बच्चों ने अपने अपने प्रोग्राम पेश किए प्रोग्राम में बच्चों को कारी मोहम्मद इसहाक डायरेक्टर मदरसा जामिया तैयबा ने तालीम के ऊपर मोटिवेट किया और तालीम हासिल करने के लिए जोर देने के लिए कहा और वीर शहीद अब्दुल हमीद की जिंदगी के बारे में बताया मदरसा जामिया तैयबा के तमाम स्टाफ को दिली मुबारकबाद पेश करीऔर मदरसा जामिया तैयबा के तमाम स्टाफ मौजूद रहे बच्चों को बताया गया हमे अपने इतिहास और महापुरुषों को नहीं भूलना चाहिए हमे उनकी जिंदगी से सीख लेने की ज़रूरत है,वहीं बच्चों को शिक्षा हासिल करने व सामाजिक कामों में आगे बढ़ने और नशे कुसंगती से दूर रहने की अपील की गई

### विधानसभा में रीको के वार्षिक प्रतिवेदन पर मुखर परिचर्चा:

## राज्य सरकार राजस्थान को 'औद्योगिक प्रदेश' बनाएगी : उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़

जयपुर (खलील कुरैशी) ।

उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि राज्य सरकार राजस्थान को 'औद्योगिक राज्य' बनाने के लक्ष्य के साथ कार्य कर रही है। इसके लिए सरकार का संकल्प भी है और स्पष्ट नीति और नीयत भी है। उन्होंने कहा कि किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए उद्योग बहुत जरूरी होते हैं। जिस देश या राज्य में उद्योग और निवेश आते हैं, वहां अर्थव्यवस्था सुधरती है और रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री गुरूवार को विधानसभा में राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास और निवेश निगम लिमिटेड (रीको) के वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2021-22 पर विचार के दौरान अपना वक्तव्यदे रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने

विगत 10 वर्षों में देश में उद्योग और निवेश के रास्ते खोले हैं। उसी का परिणाम है कि आज दुनियाभर के उद्यमी भारत में निवेश करना चाहते हैं। देश को दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने में प्रदेश के उद्यमियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। कर्नल राठौड़ ने कहा कि अब हम राजस्थान को औद्योगिक रूप से बदलेंगे। 'आत्मनिर्भर भारत' के साथ 'आत्मनिर्भर राजस्थान' भी बनेगा। उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री ने कहा कि औद्योगिक उन्नति के लिए नीति, नीयत और दृष्टि का होना बहुत जरूरी है। हम राजस्थान को आगे ले जाना चाहते हैं। इसके लिए राज्य सरकार सस्टेनेबल इंडस्ट्रियल ग्रोथ लेकर आएगी। उन्होंने कहा कि हम वास्तविक बिजनेसमैन को आगे बढ़ाना चाहते हैं। उद्यमियों को सुविधा की दृष्टि से प्रदेश में उद्योग के लिए भूमि की लागत कम करने की दिशा में विचार चल रहा है। प्रदेश में सौर ऊर्जा की अपार संभावना है। ऊर्जा के क्षेत्र में प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए राज्य सरकार महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार उद्योगों को पानी की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करेगी। इसमें ईआरसीपी का भी उद्योगों को लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि उद्यमियों की सुविधा के लिए ऑनलाइन सेवाएं भी शुरू की गई है, जिससे उन्हें कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ रहे तथा सभी कार्य मोबाइल के माध्यम से ही हो पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में छोटे एवं मध्यम उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए अलग से भूखण्डों का प्रावधान किया गया है। इसके लिए लॉटरी सिस्टम भी शुरू कर दिया गया है। उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री ने कहा कि गत सरकार ने रीको की राशि दूसरी योजनाओं में उपयोग में ली।उन्होंने कहा कि विगत 5 वर्षों में 176 औद्योगिक क्षेत्रों की घोषणा हुई, लेकिन केवल 31 औद्योगिक क्षेत्र ही अस्तित्व में आ पाए। उन्होंने भौगोलिक क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप उद्योगों की स्थापना की जरूरत पर बल दिया। साथ ही, नई तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा आदि के क्षेत्र में निवेश की आवश्यकता भी जाहिर की।

### लोकसभा सत्र के दौरान राहुल गांधी के खिलाफ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भाषा अमर्यादित:- टीकाराम जूली

- रावण ने भगवान श्री राम को बालक समझने की भूल की थी : नेता प्रतिपक्ष

**चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी)।** राजस्थान विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ देश के प्रधानमंत्री की भाषा को अमर्यादित बताते हुए कहा कि यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे देश का पीएम लोकसभा नेता प्रतिपक्ष के बारे में इस तरह की भाषा व टिप्पणी का इस्तेमाल कर रहे है। उन्होंने कहा कि हमारे देश का पीएम मंगलसूत्र, भैंस चोरी, अल्पसंख्यकों को देश की संपदा बांटने जैसी बातें

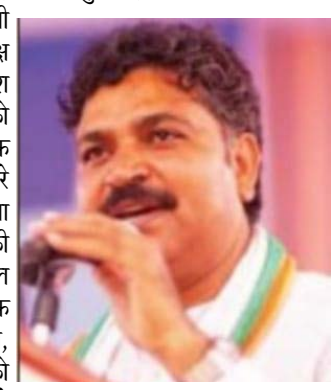

कर इस पद की गरिमा का अपमान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोकसभा में पीएम के शब्दों में घमंड, अहंकार, हिटलरशाही, तानाशाही सर चढ़कर बोल रही है। उन्होंने कहा कि रामायण में लिखा है रावण ने भगवान श्री राम को बालक समझने की भूल की थी नतीजा सबके सामने है। उन्होंने भाजपा नेताओं को भी सलाह देते हुए कहा कि छपास के रोगी नेता प्रतिपक्ष नेता राहुल गांधी के बारे में जो बयान दे रहे हैं वे बयान देने के काबिल नहीं है।

### ट्रेन रोकने पहुंचे विधायक पूनिया युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ हुए गिरफ्तार

# नीट में गड़बड़ी के खिलाफ यूथ कांग्रेस अध्यक्ष अभिमन्यु पुनिया के नेतृत्व में प्रदेश में युवा कांग्रेस का रेल रोको आंदोलन

## युवा कांग्रेस के पदाधिकारियों ने प्रदेशभर में किया जोरदार प्रदर्शन

चमकता राजस्थान

**जयपुर (खलील कुरैशी)।** नीट में गड़बड़ी के खिलाफ गुरुवार को प्रदेश में रेल रोको आंदोलन किया गया। जयपुर में यूथ कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष और संगरिया विधायक अभिमन्यु पूनिया के नेतृत्व में यह विरोध प्रदर्शन किया गया। इस दौरान विधायक पूनिया को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। वहीं, जोधपुर में प्रदर्शन शुरू होने से पहले ही पुलिस नेकार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। जयपुर में प्रदर्शन के कारण गांधी नगर रेलवे स्टेशन के बाहर और अंदर पुलिस का भा-री जाब्ता तैनात था। यूथ कांग्रेस के नेता सुबह 10.48 बजे गांधी नगर रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर-1 पर पहुंचे। पुलिस ने सभी को प्लेटफॉर्म पर ही रोक दिया। इसके बाद सभी वही धरने पर बैठ गए। इस दौरान अभिमन्यु पूनिया और पुलिस के बीच बहस हो गई। पुलिस अभिमन्यु पूनिया को जबरन उठाकर रेलवे स्टेशन से बाहर ले गई। युवा कांग्रेस का कार्यकर्ताओं ने इसका विरोध किया। कांग्रेस नेता पुलिस को हिदायत दे रहे थे कि विधायक के साथ पुलिस इस तरीके से बर्ताव नहीं कर सकती। करीब 11 बजे पुलिस ने सभी को गिरफ्तार कर लिया।नहीं जाने दिया स्टेशन की तरफकोटा में सर्किट हाउस पर एकत्र होकर कांग्रेस कार्यकर्ता रेलवे स्टेशन तक पहुंचे। यहां पुलिस जाब्ता तैनात था। पुलिस ने कार्यकर्ताओं को स्टेशन की तरफ बढने नहीं दिया।

### उदयपुर में सिटी रेलवे स्टेशन अंदर घुसने से रोका

उदयपुर के सिटी रेलवे स्टेशन के बाहर युवक कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। कार्यकर्ता अंदर जाकर हरिद्वार वाली ट्रेन को रोकना चाहते थे, लेकिन पुलिस ने अंदर जाने से रोक दिया। इस दौरान धक्का-मुक्की हो गई। शहर कांग्रेस जिलाध्यक्ष फतहसिंह राठौड़ समेत 30 कार्यकर्ताओं ने गिरफ्तारियां दीं।

### अजमेर में भी युवा कांग्रेस के साथ धक्का-मुक्की हुई

अजमेर में पुलिस के साथ जीआरपी और आरपीएफ ने सुरक्षा के पुख्ता बंदोबस्त किए। रेलवे स्टेशन के चारों तरफ पुलिस बल तैनात रहा। यूथ कांग्रेस के जिलाध्यक्ष मोहित मल्होत्रा के नेतृत्व में कार्यकर्ता इंदिरा गांधी स्मारक से रैली निकालकर रेलवे स्टेशन के बाहर पहुंचे और धरना दिया। कार्यकर्ताओं की रेलवे स्टेशन के अंदर घुसने को लेकर पुलिस के साथ धक्का-मुक्की हुई। पुलिस ने सभी कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया।

### जोधपुर में प्रदर्शन से पहले ही युवा कांग्रेस कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी गिरफ़्तार

जोधपुर में भी यूथ कांग्रेस कार्यकर्ताओं की ओर से बनाड़ रेलवे स्टेशन पर रेल रोकने का कार्यक्रम था, लेकिन पुलिस ने सुबह ही पदाधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके चलते प्रदर्शन विफल हो गया। सुबह से ही बनाड़ रेलवे स्टेशन और रेलवे फाटक पर पुलिस का पुख्ता जाब्ता तैनात रहा। रेलवे स्टेशन पर भी पुलिस के आला अधिकारी मौजूद थे। यहां शांति दिखाई दी।

### केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान नीट परीक्षा धांधली मामले में इस्तीफा दे

जयपुर में यूथ कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष अभिमन्यु पूनिया ने कहा कि 24 लाख स्टूडेंट्स के भविष्य का सवाल है, इसलिए केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को जवाब देना होगा। देश की सरकार को जवाब देना चाहिए। इस मामले से केंद्र सरकार के प्रति अविश्वास पैदा हुआ है। यूथ कांग्रेस मांग करती है कि धर्मेंद्र प्रधान को इस मामले में इस्तीफा देना चाहिए। जब यह नीट परीक्षा रद्द नहीं हो जाती, तब तक यूथ कांग्रेस सडकों पर प्रदर्शन करेंगी।

## कामां थाने के बहुचर्चित देवीराम मुल्लाका हत्याकांड में मिली एक और सफलता

# 3 साल से फरार चल रहे दो और इनामी अभियुक्तों को दबोचा

**चमकता राजस्थान**

**जयपुर (खलील कुरैशी)।** एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय की टीम ने गुरुवार को कामां थाने के बहुचर्चित देवी राम मुल्लाका हत्याकांड में एक और बड़ी सफलता हासिल की है। मामले में 3 साल से फरार चल रहे 25-25 हजार रुपए के दो और इनामी अभियुक्तों को दस्तयाब किया गया। जिन्हें थाना कामां पुलिस ने अपने मामले में गिरफ्तार कर लिया। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स एवं अपराध दिनेश एमएन ने बताया कि विभिन्न मामलों में वांछित एवं सक्रिय बदमाशों के बारे में आसूचना संकलन के लिये पुलिस मुख्यालय से प्रदेश के विभिन्न शहरों में एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स की टीम रवाना की गई है। एडीजी एमएन ने बताया कि डीआईजी क्राइम योगेश यादव के सुपरविजन एवं एजीटीएफ



के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री विद्या प्रकाश के नेतृत्व में एएसआई शैलेंद्र शर्मा, हैड कांस्टेबल मदन लाल शर्मा व कांस्टेबल बृजेश कुमार की टीम भरतपुर की ओर रवाना की गई है। टीम को गुरुवार को सूचना मिली कि देवी राम हत्याकांड के दो आरोपी आज नगर कस्बे से हरियाणा की ओर फरारी काटने जा रहे हैं।इस सूचना पर डीग एसपी राजेश मीणा के समन्वय में एजीटीएफ द्वारा कामां एसएचओ मनीष शर्मा के सहयोग से गुरुवार को मुल्लाका निवासी इनामी अपराधी बलराज गुर्जर पुत्र तीता एवं रामप्रसाद गुर्जर पुत्र हरिकिशन का पीछा कर कैथवाड़ा के पास घेराबंदी कर दबोच लिया। दोनों आरोपियों को कामां पुलिस ने अपने मामले में गिरफ्तार कर लिया है।

**यह है मामला**

11 जून 2021 की सुबह खरीदारी करने बाइक लेकर कामां के लिए निकले देवी राम गुर्जर निवासी मुल्लाका पर पुरानी रंजिश के चलते गांव के ही 20-22 व्यक्तियों ने लोहे के सरियों और लाठियों से हमला कर दिया, मरा समझ कर हवाई फायर करते हुए गांव आ गए। गांव में गोपाल व कल्लु पुत्र जोहरी, शिवराम पुत्र जीतराम, घनश्याम पुत्र रज्जो एवं तीन बच्चों सचिन पुत्र राजू, क्षमा पुत्री रामनिवास और उमेश पुत्री कल्लु पर भी बंदूक व देशी कट्टे से फायर कर घायल कर दिया। गंभीर घायल देवीलाल ने जयपुर लाते समय महुआ से पहले दम तोड़ दिया। एडीजी ने बताया कि इस मामले में थाना पुलिस द्वारा पूर्व में 8 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया था, घटना के बाद से फरार 13 आरोपियों में से 25-25 हजार के दो आरोपियों राम अवतार गुर्जर एवं बबली गुर्जर निवासी मुल्लाका को एजीटीएफ द्वारा 26 जून को पलवल एवं थाना खोह इलाके से डिटेन किया गया था। गुरुवार को दो अन्य 25-25 हजार के इनामी बलराज गुर्जर व रामप्रसाद गुर्जर को पकड़ने में सफलता प्राप्त की हैएडीजी एमएन ने बताया कि दोनों इनामी अभियुक्तों के बारे में आसूचना संकलन एवं गिरफ्तारी में एजीटीएफ के एएसआई शैलेंद्र कुमार व कांस्टेबल बृजेश कुमार की विशेष भूमिका एवं हैड कांस्टेबल मदनलाल शर्मा की तकनीकी भूमिका रही। आरोपियों की गिरफ्तारी में थाना कामां एसएचओ मनीष शर्मा ने सराहनीय योगदान दिया।

## ग्रेटर आयुक्त रूकमणि रियाड़ ने अधिकारियों को दिये अलर्ट मोड पर रहने के निर्देश

**चमकता राजस्थान**

**जयपुर (खलील कुरैशी)।** नगर निगम ग्रेटर आयुक्त रूकमणि रियाड़ ने बुधवार को हुई तेज बारिश के बाद गुरूवार सुबह शहर के विभिन्न स्थानों पर 2 घंटे से भी अधिक समय तक मौके का निरीक्षण किया तथा नगर निगम क्षेत्राधिकार में बने बाढ़ नियत्रंण कक्षों की व्यवस्थाओं को भी जांचा। आयुक्त रूकमणि रियाड़ ने डब्ल्यूटीपी नाले से निरीक्षण शुरू किया निरीक्षण के दौरान अतिरिक्त आयुक्त सीमा कुमार, मालवीय नगर जोन उपायुक्त, अधिशाषी अभियन्ता मौजूद रहे। डब्ल्यूटीपी नाले के बाद आयुक्त ने जवाहर सर्किल से लेकर जगतपुरा जोन तक नालों की स्थिति देखी साथ ही मालवीय नगर बाढ़ नियत्रंण कक्ष का भी निरीक्षण किया और मिट्टी के कट्टों, मडपंप आदि की व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के निर्देश दिये। इसके बाद आयुक्त ने मानसरोवर जोन के शिप्रा पथ का निरीक्षण किया तथा मानसरोवर एवं सांगानेर के बाढ़ नियत्रंण कक्ष की व्यवस्थाओं को परखा। उन्होंने नियत्रंण कक्ष के नम्बरों पर फोन करके भी देखा उसे चालू हालत में पाया गया। इसके बाद आयुक्त वीकेआई बाढ़ नियत्रंण कक्ष पहुंची



सीकर रोड़ सहित चौमू पुलिया, कालवाड़ रोड़, सिरसी रोड़, खातीपुरा पुलिया के जलभराव वाले स्थानों का निरीक्षण किया तथा जहां तेज बारिश के कारण दीवार गिर गई है या अन्य क्षति पहुंची है संबंधित अधिकारियों को उन सभी व्यवस्थाओं को तत्काल सुधार करने के निर्देश दियेआयुक्त रूकमणि रियाड़ ने बताया कि मानसरोवर, विश्वकर्मा, मालवीय नगर बाढ़ नियत्रंण कक्ष पर सहायक अभियन्ताओं, कनिष्ठ अभियन्ताओं की ड्यूटी लगा दी गई है और उन्हें अलर्ट मोड पर रहने के निर्देश दिये। यह अधिकारी कर्मचारी तीन पारियों में कार्य करेंगे जिसमें प्रथम पारी सुबह 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक, द्वितीय पारी दोपहर 2 बजे से रात्रि 10 बजे तक तथा तृतीय पारी रात्रि 10 बजे से सुबह 6 बजे तक रहेगी। बाढ़ नियत्रंण कक्ष के लिये हैल्पलाइन नंबर जारी किये गये है जिसके अन्तर्गत मानसरोवर फायर स्टेशन- 0141-2395566, 8764880060 तथा मालवीय नगर फायर स्टेशन के लिये 0141-2755930, 8764880030, विश्वकर्मा फायर स्टेशन में 0141-2330080, 8764880070 जिसके तहत आपात समय में सम्पर्क कर सकते है।

## न्यूट अपडेट

### अलवर गेट का सहायक उप निरीक्षक पुलिस 50 हजार रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार



**चमकता राजस्थान, जयपुर (खलील कुरैशी)।** ए.सी.बी. मुख्यालय के निर्देश पर ए.सी.बी. की विशेष अनुसंधान इकाई (एस.आई.डब्ल्यू.), जयपुर द्वारा आज अजमेर में कार्यवाही करते हुये नन्द भँवर सिंह सहायक उपनिरीक्षक पुलिस, चौकी नाका मदार, पुलिस थाना अलवर गेट, अजमेर को परिवादी से 50 हजार रुपये रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक पुलिस डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि ए.सी.बी. की विशेष अनुसंधान इकाई (एस.आई.डब्ल्यू.), जयपुर को परिवादी द्वारा एक शिकायत इस आशय की दी गई कि उसके द्वारा दर्ज कराये गये प्रकरण में मदद करने की एवज में अनुसंधान अधिकारी नन्द भँवर सिंह सहायक उपनिरीक्षक पुलिस, चौकी नाका मदार, पुलिस थाना अलवर गेट, अजमेर द्वारा 1 लाख रुपये रिश्वत राशि मांग कर परेशान किया जा रहा है जिस पर एसीबी जयपुर के उप महानिरीक्षक पुलिस रणधीर सिंह के सुपरवीजन में ए.सी.बी. विशेष अनुसंधानइकाई (एस.आई.डब्ल्यू.), जयपुर के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ललित किशोर शर्मा के नेतृत्व में शिकायत का सत्यापन किया जाकर पुलिस निरीक्षक कविता यादव द्वारा मय टीम उप अधीक्षक पुलिस सुरेन्द्र पंचौली एवं अन्य के अजमेर में ट्रेप कार्यवाही करते हुए आरोपी नन्द भँवर सिंह सहायक उपनिरीक्षक पुलिस, चौकी नाका मदार, पुलिस थाना अलवर गेट, अजमेर को परिवादी से 50 हजार रुपये रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया है उल्लेखनीय है कि आरोपी द्वारा शिकायत से पूर्व भी 50 हजार रुपये रिश्वत के रूप में परिवादी से वसूल कर लिये थे एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव के सुपरवीजन में आरोपी से पूछताछ तथा कार्यवाही जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान किया जायेगा।भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक पुलिस डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने समस्त प्रदेशवासियों से अपील की है कि भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की टोल-फ्री हैल्पलाईन नं. 1064 एवं हँ३रंस्त्रस्त्र हैल्पलाईन नं. 94135-02834 पर 24७7 सम्पर्क कर भ्रष्टाचार के विरूद्ध अभियान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। एसीबी आपके वैध कार्य को करवाने में पूरी मदद करेगी।

### 30 साल से फरार उद्घोषित अपराधी को भीलवाड़ा से किया गिरफ्तार

**चमकता राजस्थान, जयपुर/जोधपुर (खलील कुरैशी)।** जोधपुर पूर्व जिले की सदर बाजार थाना पुलिस की टीम ने 30 सालों से फरार चल रहे उद्घोषित अपराधी मातूराम उर्फ मातू सिंह पुत्र धर्मदास उर्फ राम सिंह (55) निवासी लाडनूं जिला कुचामन डीडवाना को भीलवाड़ा जिले के थाना बागोर क्षेत्र से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है।डीसीपी पूर्व आलोक श्रीवास्तव ने बताया कि कटला बाजार जोधपुर के एक व्यापारी गोविंद अग्रवाल द्वारा 2 अप्रैल 2094 को एक रिपोर्ट दी गई की उसकी फर्म में मातूराम नौकरी करता था। उसने झूठा झांसा देकर उससे नगद 1705 रुपए लिए और उसकी अलग-अलग पार्टी को झांसा देकर 5457 रुपए नगद और माल के रूप में उठा लिए। रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की गई।आरोपी की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने कई बार उसके घर पर दबिश दी। आरोपी अपने गांव में पत्नी व बच्चों को छोड़कर पुलिस की पकड़ से बचने के लिए चला गया था जिसे कोर्ट से उद्घोषित करवाकर स्थाई वारंट जारी करवाया गया। लंबे समय से फरार चल रहे अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए चलाए जा रहे हैं अभियान के अंतर्गत एडीसीपी वीरेंद्र सिंह व एसीपी मंगलेश चुण्डावत एवं एसएचओ दयालाल चौहान के नेतृत्व में विशेष टीम गठित की गई।हैड कांस्टेबल हीरालाल एवं कांस्टेबल राकेश द्वारा आरोपी के गांव लाडनूं पहुंच आसूचना संकलित कर वर्तमान निवास का पता लगा बुधवार को आरोपी मातूराम को भीलवाड़ा जिले के बागोर थाना क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया। आरोपी ने घर छोड़ने के बाद दूसरी शादी कर ली थी। इसके बारे में परिवार के किसी सदस्य को भी नहीं बताया था। पिछले 30 वर्षों से यह अजमेर व भीलवाड़ा जिलों में फरारी काट रहा था।




## जल संचय वर्षा जल संग्रहण भूजल पुनर्भरण एवं जल के मितव्ययी उपयोग के संदर्भ में राज्य स्तरीय सेमिनार शुक्रवार को जल भवन में

**जलदाय मंत्री द्वारा जल भवन में लगायें जायेंगे 500 पौधे**

**विभाग के राजस्थान भर के संस्थानों सहित कार्यालय में 1 लाख पौधे लगाने के अभियान के तहत किया जाएगा पौधारोपण**

**चमकता राजस्थान**

**जयपुर (खलील कुरैशी)।** प्रदेश में जल संरक्षण व हरियाली क्षेत्र को बढ़ाने के उद्देश्य से जलदाय मंत्री कन्हैयालाल द्वारा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में शुक्रवार को प्रातः 10:00 बजे पौधारोपण किया जाएगा। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में लगभग 500 छायादार एवं फलदार पौधे लगाए जाएंगे साथ ही विभाग के राजस्थान भर के संस्थानों एवं कार्यालयों में एक लाख पौधे लगाने के अभियान के तहत पौधारोपण की शुरुआत की जाएगी। राज्य में गिरते हुए भूजल स्तर, पेयजल गुणवत्ता, जल सुरक्षा, जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन एवं वृक्षारोपण कार्यों की राज्य स्तरीय कार्य-योजना तैयार करने के लिए 5 जुलाई शुक्रवार को एक दिवसीय राज्य स्तरीय सेमिनार का आयोजन जल भवन में किया जाएगा। साथ ही जलदाय मंत्री द्वारा एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक के सहयोग से नीर निधि निर्माण के तहत जल भवन में वेस्ट वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का शिलान्यास किया जाएगा जलदाय सचिव डॉ समित शर्मा ने बताया कि सेमिनार मे प्रदेश में जल के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली करने वाली स्वयंसेवी संस्थाओं के करीब 60 से 70 प्रतिनिधियों द्वारा भाग लिया जाएगा। सेमिनार में जल संरक्षण एवं वृक्षारोपण कार्य हेतु विस्तृत कार्य योजना जन भागीदारी से बनाए जाएगी।सेमिनार में मुख्य वक्ता के रूप में पदमश्री लक्ष्मण सिंह लापोडिया, पदमश्री हिमताराम नागौर, प्रोफेसर मनोहर सिंह राठौड़, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑ×फ हेल्थ मैनेजमेंट रिसर्च, भौरूका चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रतिनिधि, यूनिसेफ, यूनोप्स, इनरैम फाउंडेशन, नेशनल जल जीवन मिशन के अंतर्गत कार्यरत की-रिसोर्स सेंटर के प्रतिनिधि गण, एमएनआईटी के प्रोफेसर, जे.एन.आई.टी. के प्रोफेसर, एलएसजी के प्रतिनिधि, अर्पण सेवा संस्थान के प्रतिनिधि, सामाजिक आर्थिक विकास संस्थान, सृष्टि सेवा संस्थान, राजस्थान हुमन केयर फाउंडेशन, प्रेरणा संस्थान, जीनस संस्थान, ग्रामोदय सामाजिक संस्थान, स्टूडेंट रिलीफ सोसायटी, वाणी संस्थान, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, सेल्फ डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट, ममता संस्थान, एवं अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा भाग लिया जाएगा। साथ ही 30 से 40 अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि/विषेषज्ञ ऑनलाइन लिंक के माध्यम से इस सेमिनार से जुड़ेंगे। सेमिनार में विशेषज्ञों के द्वारा प्रेजेंटेशन एवं ग्रुप डिस्कशन के माध्यम से राज्य की जल संरक्षण योजना का प्रारूप तैयार किया जाएगा।

## जनसुनवाई में ग्रामीणों की समस्याओं का किया समाधान

**➲ एसडीएम सहित ब्लॉकस्तरीय अधिकारियों की अलग-अलग जनसुनवाई में करीब 70 परिवाद दर्ज**

**चमकता राजस्थान, नदबई (राजवीर सिंह)।** नदबई ब्लॉक में गुरुवार को प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर जनसुनवाई का आयोजन हुआ। जिसमें बिजली-पानी, सरकारी भूमि पर अतिक्रमण, मुख्य रास्ते पर पानी एकत्रित होने, सरकारी योजना से लाभान्वित नही होने सहित अन्य समस्याओं के 70 प्रकरण दर्ज हुए।एसडीएम गंगाधर मीणा ने ग्राम पंचायत नयावास में जनसुनवाई दौरान ग्रामीणों की समस्या सुनते हुए मौके पर समाधान किया। तहसीलदार कैलाश गौतम ने ग्राम पंचायत कटारा, बरौलीछार, अखैगढ़ में, नायब तहसीलदार दीपा यादव ने खेडीदेवीसिंह, खटौटी, नाम, रायसीस में, अतिरिक्त विकास अधिकारी सौदान सिंह ने लुहासा, गांगरौली, बहरामदा, ऐचेंरा व श्रीराम सैनी ने ऊँच, भदीरा, रौनीजा, करीली, अधिशाषी अभियंता पीएचईडी मुकेश अग्रवाल ने जहांगीरपुर, बछामदी, गगवाना, अटारी, सीबीईओ सुरेश भातरा ने मई, डहरा, परसवारा, लखनपुर, सहायक अभियंता शिवसिंह मीना ने पिपरऊ, बरौलीरान, तलछेरा, उटारदा, सहायक अभियंता आशा बोहरा ने हन्तरा, न्योठा, झारकई, खांगरी एवं बीसीएमओ डॉ राहुल कौशिक ने कबई, करही, पहरसर व गादौली में जनुसनवाई दौरान समस्याओं का मौके पर समाधान करने का प्रयास किया।

## उपखण्ड अधिकारी ने रास्ते को राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज के दिये आदेश

**चमकता राजस्थान, भरतपुर (राजवीर सिंह)।** नदबई-उप तहसील मुख्यालय लखनपुर मे से होकर निकल रही पक्की सडक जो बांसी से खेडली गडासिया तक प्रधानमंत्री ग्राम सडक योजना के तहत, निर्माण सा.नि.वी द्वारा करवाया गया था परन्तु उक्त सडक किसानों की निजी खातेदारी मे होकर बहुत समय पहले पक्की बन गयी थी। रिकॉर्ड में सडक ना होने से सा.नि.वि एवं प्रशासन को काफी समस्या आ रही थी। समाजसेवी एडवोकेट महेश लखनपुर ने बताया की उक्त मार्ग को रिकॉर्ड मे अमलदराज के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को भरतपुर प्रवास पर पत्र द्वारा अवगत करवाया था। रिकॉर्ड में दर्ज से पहले उपखण्ड अधिकारी नदबई गंगाधर मीना ने संबंधित खातेदारों से जरिये नोटिस आपत्तियां मांगी थी। जिसमे औकार सिंह पुत्र सूरजमल, नेतराम, कमलसिंह, सरेश चंद पुत्रान रघुनाथ, केदार पुत्र हीरालाल, मुरारी, गंभीर, जयराम, लेखराज पुत्रान भीकम, जगतसिंह पुत्र गोविंद,भगवान सिंह पुत्र बदनसिंह, राधेश्याम पुत्र हीरालाल आदि कास्तकारों ने मुआवजे को लेकर आपत्ति दर्ज करवायी थी। उनको खारिज कर रास्ते को तीस फुट राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज के आदेश दिये। समाजसेवी लखनपुर ने तीस फुट रास्ता राजस्व रिकॉर्ड मे दर्ज होने पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, क्षेत्रीय विधायक जगतसिंह, उपखंड अधिकारी नदबई गंगाधर मीना, तहसीलदार कैलाश गौतम, कानूनगो अतरसिंह, पटवारी धर्मेन्द्र चौधरी आदि का आभार प्रकट किया है।

## पर्यावरण संरक्षण को लेकर चलाया अभियान

**चमकता राजस्थान, वैर (राजवीर सिंह)।** आज रिम झिम बारिश में पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण को हरा भरा रखने के लिए गांव तलछेरा (मूड़िया ललिता) में अभियान चलाया गया। चतर सिंह तलछेरा प्रकृतिप्रेमी ने बताया कि हर वर्ष की भांति पेड़ पौधे लगाने का अभियान चल रहा है। चतर सिंह तलछेरा के द्वारा इस वर्ष गांव तलछेरा में 51 पेड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा रखा गया है। अब तक कुल 200 पेड़ पौधे लगा चुके हैं। वातावरण के तापमान को कम करने और मनुष्यों के जीवन को बचाने के लिए पर्यावरण को हरा भरा रखना जरूरी है। सबसे अपील की गई है कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम 5 पौधे जरूर लगाएं।नीरव सैनी ने बताया कि पेड़ पौधे लगाने का कार्य पुण्य का काम है।

## खाने में जहर देकर हत्या की फरार आरोपी महिला गिरफ्तार, थाना स्तर पर टॉप टेन में थी वांछित

**चमकता राजस्थान, जयपुर/चूरू (खलील कुरैशी)।** चूरू जिले से खाने में जहर देकर परिवार के एक व्यक्ति की हत्या के मामले में करीब चार महीनों से फरार चल रही आरोपी महिला बबू कंवर पत्नी कालू सिंह राजपूत (33) निवासी छाजूसर को थाना राजलदेसर पुलिस की टीम ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी महिला थाना स्तर पर टॉप टेन वांछित अपराधियों की सूची में शामिल है।एसपी जय यादव ने बताया कि घटना के संबंध में 5 मार्च 2024 को छाजूसर निवासी छगनसिंह राजपूत ने रिपोर्ट दी कि ओमसिंह परिवार में रिश्ते में भाई लगता है। 25 फरवरी को खाना खाने के बाद उसकी मां, बेटा सुरेंद्र व पोता एवं भाई ओमसिंह सहित सात-आठ लोग बीमार हुए थे। सभी को रतनगढ़ अस्पताल लेकर आए, जहां डॉक्टर ने उनके



खाने में जहर की बात कही। इसके बाद सभी को बीकानेर रेफर किया। बीकानेर में इलाज के दौरान ओमसिंह की मौत हो गई। उसे परिवार के सदस्यों पर शक है कि दूध में जहर मिलाया गया है। रिपोर्ट पर थाना राजलदेसर पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की गई। एसपी यादव ने बताया कि घटना के वक्त से ही आरोपी महिला बबू कंवर फरार चल रही थी मामले की गंभीरता को देखते हुए ऑपरेशन शिकंजा के तहत अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार व सीओ अनिल पुरोहित के सुपरविजन एवं एसएचओ गीता रानी के नेतृत्व में थाना स्तर पर एक विशेष टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा फरार चल रही आरोपिया को गिरफ्तार कर लिया है। जिसे पूछताछ के बाद कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

# राजस्थान के सरपंच एक बार फिर आंदोलन की राह पर

**चमकता राजस्थान**

**जयपुर (खलील कुरैशी)।** सरपंच संघ राजस्थान की महत्वपूर्ण मीटिंग राजस्थान सरपंच संघ के प्रदेश अध्यक्ष बंसीधर गढ़वाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई सरपंच के मुख्य प्रवक्ता रफीक पठान ने बताया कि मीटिंग में प्रदेश कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं राजस्थान के सभी जिलों से जिला अध्यक्ष ब्लॉक अध्यक्ष एवं सरपंचो ने भाग लिया एवं सभी ने अपने-अपने विचार रखें 2 घंटे विचार विमर्श करने के बाद सरपंच संघ की कार्यकारिणी द्वारा विभिन्न मांगों को लेकर सरकार एवं उच्च अधिकारियों से बार-बार मिलने के बाद भी समस्याओं का समाधान नहीं पाया , राज्य वित्त आयोग एवं केंद्रीय वित्त आयोग नरेगा सामग्री का भुगतान समय पर नहीं हो रहा है यह करीबन 2 साल का बकाया चल रहा है खाद्य सुरक्षा का पोर्टल लंबे समय से बंद है और यह 2011 के आंकड़ों के अनुसार चल रहा है इसमें पोर्टल को खोलकर नए पात्र परिवारों



को जोड़ने की मांग को लेकर काफी प्रयास किया जा चुके हैं लेकिन आम जनता को राहत नहीं दी जा रही है प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृतियां 2021 के बाद जारी नही हुई है ऐसे लाखों पात्र परिवार प्रधानमंत्री आवास के इंतजार में बैठे हुए हैं ऐसे में पात्र परिवारों को शीघ्र प्रधानमंत्री आवास दिया जाए वह पोर्टल खोलकर वंचित परिवारों को जोड़ा जाए इसी प्रकार की अन्य मांगों को लेकर करीबन 14 मांगों का मांग पत्र तैयार किया गया एवं राजस्थान का ज्ञापन आज सचिवालय में मुख्य सचिव सुधांशु पंत को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया, इसके अलावा अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज अभय कुमार, पंचायत राज सचिव रवि जैन, ग्रामीण विकास सचिव आशुतोष ए टी, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त विभाग अखिल अरोड़ा, नरेगा आयुक्त टीना डाबी सहित अन्य अधिकारियों से मुलाकात करके पुणे सरपंचों की समस्याओं से अवगत कराया साथ ही चेतावनी दी कि अगर समय रहते सरपंचों की समस्याओं का समाधान नहीं किया तो 8 जुलाई सोमवार को राजस्थान की सम सेंट ग्राम पंचायत में 1 दिन की सांकेतिक तालाबंदी की जाएगी, इसके बाद 10 जुलाई को पंचायत समिति स्तर पर धरना व ज्ञापन दिया जाएगा तथा 12 जुलाई को सभी जिला मुख्यालयों पर जिला कलेक्टर के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा जाएगा इसके बाद भी मांगे नहीं मानी जाती है तो 18 जुलाई को राजस्थान के सभी सरपंच जयपुर में इकट्ठा होकर विधानसभा का घेराव करेंगे बैठक में मुख्य रूप से सरपंच संघ राजस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष नेमीचंद मीणा रोशन अली मुख्य महामंत्री शक्ति सिंह रावत संयोजक महेंद्र सिंह मझेवला, जयपुर जिला अध्यक्ष मेहर सिंह धनकड़ मुख्य प्रवक्ता रफीक पठान टोंक जिला अध्यक्ष मुकेश मीणा बूंदी जिला अध्यक्ष आनंद लाल मीणा झालावाड़ जिला अध्यक्ष अर्जुन सिंह गौड़ दोसा जिला अध्यक्ष हजारीलाल मीणा करौली जिला अध्यक्ष प्रकाश मीणा सवाई माधोपुर जिला अध्यक्ष बाबूलाल मीणा टोडाभीम ब्लॉक अध्यक्ष राकेश मीणा प्रदेश उपाध्यक्ष उम्मत शंकर यादव प्रदेश सचिव मनोज मीणा प्रतापगढ़ जिला अध्यक्ष रामलाल मीणा चित्तौड़ जिला अध्यक्ष गणेश साहू, पाली से महेंद्र सिंह चौहान जोधपुर से प्रमिला प्रमिला चौधरी दूदू से मंगली देवी प्रवक्ता रामप्रसाद चौधरी झुंझुनू से संजय कुमार सैनी उमेश सिंह बराला सीकर से विद्याधर मील लालसोट ब्लॉक अध्यक्ष हेमराज मीणा जोधपुर से नाथू सिंह डूंगरगढ़ से राकेश नायक मांडलगढ़ से सोमवती मीणा भीमसागर से सत्यनारायण शर्मा सहित अन्य सभी जिलों से प्रमुख प्रमुख सरपंच उपस्थित रहे।

## जयपुर विकास प्राधिकरण दिया प्रभावी कार्रवाई को अंजाम

## भू-माफियाओं पर कस रहा है निर्बाध रूप से शिकंजा

# जोन-10 में पन्द्रह बीघा बेशकीमती सरकारी भूमि को कराया अतिक्रमण मुक्त

### जेडीए मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन अधिकारी महेंद्र कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में अपने कर्तव्यों का कर रहा है सफल क्रियान्वयन

**चमकता राजस्थान**

जयपुर!(खलील कुरैशी) 04 जुलाई। जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा जोन-10 में ईकोलोजिकल जोन ग्राम रोपाड़ा में करीब 15 बीघा जेडीए स्वामित्व की बेशकीमती सरकारी भूमि को कब्जा-अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन महेन्द्र कुमार शर्मा ने बताया कि जोन-10 के क्षेत्राधिकार ईकोलोजिकल जोन में अवस्थित ग्राम रोपाड़ा में जेडीए स्वामित्व की करीब 15 बीघा बेशकीमती सरकारी भूमि पर भू-माफियों द्वारा कब्जा-अतिक्रमण कर अवैध रूप से बाउण्ड्रीवाल, कोठरियानुमा ढ़ांचे बनाकर, तारबंदी कर व अन्य अवैध निर्माण कब्जा-अतिक्रमण किये जाने की सूचना प्राप्त होने पर आज जोन-10 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर जेडीए स्वामित्व की बेशकीमती सरकारी भूमि को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। जविप्रा स्वामित्व की सरकारी भूमि पर अवैध कब्जे-अतिक्रमण करने के संबंध में संबंधित के विरूद्ध कार्यवाही बाबत उक्त सरकारी भूमि को संरक्षित व सदुपयोग करने के संबंध में उपायुक्त जोन-10 को पत्र लिखा गया है।उक्त कार्यवाही प्रवर्तन अधिकारी जोन-10, 14 तथा प्राधिकरण में उपलब्ध जाप्ते, लेबर गार्ड एवं जोन में पदस्थापित राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई।

## एक नजर

### भारत विकास परिषद द्वारा मनाए जा रहे सेवा पर्यावरण पखवाड़ा

**चमकता राजस्थान। धौलपुर (रामदास तरुण )** बाड़ी उपखण्ड में भारत विकास परिषद द्वारा मनाई जा रहे सेवा पर्यावरण पखवाड़े जो 27 जून से 10 जुलाई 2024 तक रहेगा।इसके अंतर्गत आज डायबिटीज और ब्लड प्रेशर की जांच कर,150 लोगों को लाभान्वित किया गया ।कार्यक्रम संयोजक दिनेश मंगल नर्सिंग ऑफिसर ने बताया कि जांच शिविर के साथ-साथ बिजौली गौशाला में गौ माता की सेवा कर, उनको गुड रोटी एवं हरा चारा खिलाया गया। शाखा सचिव दीपक सिंघल ने बताया कि यह कार्यक्रम प्रतिदिन 10 जुलाई तक जारी रहेगा। आज के सेवा कार्यक्रम में क्षेत्रीय संयुक्त महासचिव डॉ. शिवदयाल मंगल के साथ प्रांतीय महिला प्रमुख सरोज मंगल, बृजेंद्र सोनी, राकेश मंगल, लखन लाल हिंद, राधे श्याम जिंदल, प्रवीन मंगल, मुकेश सिंघल, ऋषि डायमंड, धर्मेंद्र गर्ग, अश्वनी गोयल, विजय सिंघल, मदन मंगल, रवि सिंघल, रितु सिंघल, डॉ. विमलेश बंसल, निर्मला गर्ग, रमा रावत के साथ साथ बहुत सी महिला एवम पुरुष कार्यकर्त्ता मौजूद रहे।

### दुष्कर्मी गिरफ्तार, मासूम के साथ किया था दरिंदगी

**नवादा।** नवादा जिले के नारदीगंज इलाके के एक गांव में 3 साल की मासूम के साथ दुष्कर्म मामले का राजफाश पुलिस ने कर दिया है। दुष्कर्मी पीड़िता का फूफा है। आरोपित को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। नवादा पुलिस ने बताया कि सुनील मांझी, उम्र- 35 वर्ष, पिता राम प्रसाद मांझी निवासी सिकंदरपुर, थाना-नगर, जिला-नवादा वर्तमान दलित टोला पंचाना, थाना-नारदीगंज, जिला-नवादा को गिरफ्तार किया गया है। उसने अपना अपराध भी स्वीकार कर लिया है। पुलिस के अनुसार परिजन व आसपास के लोगों से कड़ाई से पूछताछ में यह बात सामने आई है कि दुष्कर्मी उसका फूफा ही है। जिसके बाद आरोपित को गिरफ्तार किया गया। घटना के बावत महिला थाना नवादा में प्राथमिकी पॉक्सो एक्ट दर्ज की गई है। उल्लेखनीय है कि मंगलवार 2 जुलाई 24 की रात बच्ची अपने स्वजनों के साथ घर में सो रही थी। रात में परिजनों की नींद खुली तो वह बिस्तर से गायब थी। परेशान परिजन रात में ही उसे ढूंढने लगे। नहीं मिली तो सूचना नारदीगंज थाना को दी।

### नालंदा में 211 अभ्यर्थियों को मिला नियोजन पत्र

**बिहारशरीफ।** मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के कर कमलों द्वारा विशेष सर्वेक्षण सहायक बंदोबस्त पदाधिकारी, विशेष सर्वेक्षण कानूनगो, विशेष सर्वेक्षण लिपिक, विशेष सर्वेक्षण अमीन के पदों पर चयनित 9 हजार 8 सौ 88 अभ्यर्थियों का नियोजन पत्र वितरण समारोह का सीधा प्रसारण किया गया।इसी परिप्रेक्ष्य में कपूरी भवन , बिहारशरीफ में नालंदा के जिलाधिकारी शशांक शुभंकर एवं बंदोबस्त पदाधिकारी उदिता सिंह के द्वारा बंदोबस्त कार्यालय नालंदा के तत्वाधान में 211 नवनियोजित संविदा कर्मियों (विशेष सर्वेक्षण सहायक बंदोबस्त पदाधिकारी 12, विशेष सर्वेक्षण कानूनगो 22, विशेष सर्वेक्षण लिपिक 26, विशेष सर्वेक्षण अमीन 151) को नियोजन पत्र वितरित किया गया। बंदोबस्त पदाधिकारी ने सभी चयनित अभ्यर्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि 4 जुलाई से 10 जुलाई तक नगर भवन, बिहारशरीफ में मूल प्रमाण पत्रों के साथ योगदान देना सुनिश्चित करेंगे।

### चोपड़ा हिंसा मामले में दो और लोगों की गिरफ्तारी

**कोलकाता।** पश्चिम बंगाल पुलिस ने गुरुवार को उत्तर दिनाजपुर जिले के चोपड़ा में एक महिला पर भीड़ की पंचायती के बाद हुए हुए हमले के मामले में दो और लोगों को गिरफ्तार किया है। इन दोनों की गिरफ्तारी के साथ इस मामले में अब तक कुल चार लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। राज्य पुलिस सूत्रों ने बताया कि गिरफ्तार किए गए दो व्यक्तियों की पहचान अब्दुल रऊफ और तहरुल इस्लाम के रूप में हुई है। दोनों इस हमले के सह-आरोपित हैं। उन्हें उसी वीडियो में मुख्य आरोपित, स्थानीय तृणमूल कांग्रेस नेता तजिमुल उर्फ जेसीबी के साथ पीड़ितों पर हमला करते हुए देखा गया था।

### नगर निगम के कर्मचारी की गोली मार कर हत्या

**हुगली।** हुगली जिले के बैंडेल रेलवे स्टेशन से कुछ दूरी पर बुधवार रात कोलकाता नगर निगम के कर्मचारी लालबाबू ग्वाला (50) की गोलीमार कर हत्या कर दी गई। पुलिस सूत्रों के अनुसार, इस मामले की जांच में जुटी चंदननगर पुलिस कमिश्नरेट की पुलिस ने मृतक के भतीजे आदित्य ग्वाला को हिरासत लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। आदित्य न्यू काजीडांगा इलाके में लालबाबू के घर से कुछ दूरी पर रह रहता है। गोलीबारी की घटना के बाद लालबाबू के भतीजे को देर रात पुलिस ने हिरासत में ले लिया। हालांकि उसकी मां का दावा है कि घटना के वक्त आदित्य घर पर ही था। लालबाबू पर बुधवार रात कार्यालय का समाप्त करने के बाद लौटते समय बैंडेल स्टेशन से घर जाते समय हमला किया गया।

# राजभवन में केंद्रीय बलों की मांग को लेकर दिल्ली में बैठे हैं राज्यपाल

**संवाददाता**

**कोलकाता।** राज्यपाल सीवी आनंद बोस अब तक दिल्ली से क्यों नहीं लौट रहे हैं? वह काफी समय से राजधानी में हैं। उनकी दिल्ली में बैठने के पीछे का राज क्या है? बुधवार को गृह मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक, वह तब तक शहर नहीं लौटेंगे जब तक कोलकाता के राजभवन की सुरक्षा केंद्रीय बलों को नहीं सौंप दी जाती। दरअसल, वे दिल्ली में भी ऐसा ही करने की कोशिश कर रहे हैं। वह राजभवन की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाल रही कोलकाता पुलिस को हटाकर केंद्रीय बलों से घिरा कराना चाहते हैं। दरअसल, वह इस प्रस्ताव को लेकर गृह मंत्रालय के साथ-साथ कई संबंधित विभागों से भी मुलाकात कर रहे हैं। इतना ही नहीं, राज्यपाल ने केंद्रीय बलों को लेकर चिंतित कई राजनीतिक नेताओं से भी बात की है। ताजा रिपोर्ट्स के मुताबिक, बोस को अभी पूरी तरह से हरी झंडी नहीं मिली है। क्योंकि, अगर कोलकाता के राजभवन को केंद्रीय बलों ने घेर लिया तो भविष्य में अन्य राज्यों में भी दिक्कत हो सकती है। केंद्र-राज्य संबंध भी प्रभावित हो सकते हैं। और इसीलिए गृह मंत्रालय गवर्नर बोस को तुरंत बताए बिना विभिन्न हलकों से इस मुद्दे पर राय मांग रहा है। सूत्रों के मुताबिक, राज्यपाल केंद्रीय गृह मंत्री

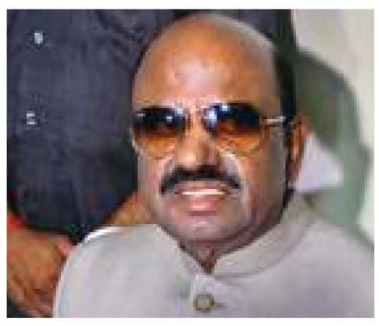

अमित शाह की तुलना में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के ज्यादा करीब हैं। और इसलिए खबर है कि गृह मंत्री और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की दो लॉबी के बीच शीत युद्ध के कारण कोलकाता में राजभवन को लेकर फैसला जल्दी नहीं हो पा रहा है। हालाँकि, अजीत डोभाल खेमे ने गवर्नर बोस के प्रस्ताव को तुरंत स्वीकार कर लिया और सिफारिश की कि राजभवन को केंद्रीय बलों द्वारा घेर लिया जाए। लेकिन राजधानी के नॉर्थ ब्लॉक के सूत्रों के मुताबिक, गृह मंत्रालय और अमित शाह के करीबी अधिकारी निर्णय लेने से पहले सभी पहलुओं पर गौर कर रहे हैं।

उधर, राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर राज्य प्रशासन और पुलिस के तीन शीर्ष अधिकारियों के खिलाफ 'कड़ी कार्रवाई' की सिफारिश की है। 6 जून और 20 जून को केंद्रीय गृह मंत्री को लिखे दो पत्रों में बोस ने तीनों अधिकारियों पर अखिल भारतीय सेवा शर्तों और आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप लगाया। ये अधिकारी हैं राज्य के मुख्य सचिव बीपी गोपालिका, कोलकाता पुलिस कमिश्नर विनीत गोयल और डीसी (सेंट्रल) इंदिरा मुखोपाध्याय।

राजभवन सूत्रों के मुताबिक, एक महिला अस्थायी कर्मचारी द्वारा पुलिस में शिकायत करने के बाद राज्यपाल ने पहले कोलकाता पुलिस कमिश्नर और संबंधित डीसी को जांच के लिए हटाने की सिफारिश की थी। दिल्ली के नॉर्थ ब्लॉक के सूत्रों के मुताबिक, बोस का पत्र मिलने के बाद गृह मंत्रालय के अधिकारी लगभग हैरान रह गए। क्योंकि, भले ही विभिन्न राज्यों के राज्यपालों ने संबंधित प्रांतों की विभिन्न स्थितियों के बारे में रिपोर्ट भेजी हो, लेकिन उन्होंने आज तक कभी भी वहां की सरकार के शीर्ष स्तर के अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की सिफारिश नहीं की है। 20 जून को राज्यपाल द्वारा शाह को लिखे पत्र में मुख्य सचिव और पुलिस कमिश्नर द्वारा राजभवन मामले की जांच का भी जिक्र किया गया था।

## जीकेबी ऑप्टिकल्स ने वाइडएक्स के साथ साझेदारी की घोषणा की

**संवाददाता**

**कोलकाता।** आईकेयर सॉल्यूशंस में एक जाना-माना नाम, जीकेबी ऑप्टिकल्स ने आज वाइडएक्स के साथ साझेदारी की घोषणा की है। वाइडएक्स हियरिंग टेक्नोलॉजी सॉल्यूशंस में एक ग्लोबल लीडर है। अब एक ही छत के नीचे आंखों व कानों की देखभाल संभव हो होगी। इस साझेदारी की बदौलत आंखों की देखभाल में जीकेबी की महारत और वाइडक्स के अत्याधुनिक श्रवण उपकरण एक ही स्थान पर उपलब्ध होंगे। इससे उन लोगों को लाभ मिलेगा, जो एक ही जगह पर अपनी आंखों एवं कानों की देखभाल का अनुभव चाहते हैं।

ये सेवाएं छह प्रमुख शहरों-कोलकाता (रासबिहारी), बेंगलुरू (इंदिरा नगर),चेन्नई (अलवरपेट), दिल्ली-एनसीआर (एंबिएंस मॉल), हैदराबाद (जुबली हिल्स), मुंबई (दादर) में स्थित जीकेबी ऑप्टिकल्स स्टोर्स पर उपलब्ध होंगी। इन स्टोर्स पर आने वाले ग्राहक अपने कानों की सेहत को परखने के लिए 5-मिनट की श्रवण जांच मुफ्त में करवा सकते हैं।

प्रियंका गुप्ता, डायरेक्टर ऑफ ब्राण्ड्स, जीकेबी ऑप्टिकल्स का कहना है, ग्राहकों को अपनी आंखों और कानों की समस्याओं के लिए एक ही छत के नीचे समाधान देने के लिए वाइडएक्स के साथ साझेदारी करके बेहद खुशी हो रही है। वाइडएक्स के साथ साझेदारी करके हम अपने ग्राहकों को इंडस्ट्री की बेहतरीन सुनने की मशीनों के साथ-साथ अपनी आईकेयर की विशेषज्ञता मुहैया करा पाएंगे। साथ ही एक ही छत के नीचे आंख-कान से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का भी समाधान करेंगे। हमें पूरा विश्वास है कि इस साझेदारी से हम लोगों को इस दुनिया का एक पूर्ण अनुभव दे पाएंगे।

### यूनीक प्रो साइंस ने भारतीय पर्सनल केयर मार्केट में किया प्रवेश

## पावरफुल विदेशी अवयवों ऑस्ट्रेलियाई ककादू प्लम और जापानी कैमेलिया से बने प्रोडक्ट्स

**संवाददाता**

**कोलकाता।** हाल ही में भारत के डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर (डी2सी) पर्सनल केयरस्पेस में प्रवेश करने वाली कंपनी यूनीक प्रो साइंस ने अपने आधिकारिक लॉन्च की घोषणा की है। ब्राण्ड स्किन एवं हेयर केयर प्रोडक्ट्स की व्यापक रेंज लेकर आता है, जिन्हें खासतौर पर भारतीय उपभोक्ताओं की विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है।

गहन अनुसंधान एवं विकास के बाद प्राकृतिक अवयवों की मदद से आधुनिक तकनीक से बने यूनीक प्रो साइंस के प्रोडक्ट्स भारतीय त्वचा एवं बालों की देखभाल संबंधी सभी जरूरतों को पूरा करते हैं। जाने-माने उद्यम नवयुग ग्लोबल वेंचर्स

प्राइवेट लिमिटेड द्वारा समर्थित यूनीक प्रो साइंस ने 2022 में अपनी यात्रा की शुरूआत की थी। दो सालों तक उपभोक्ताओं के साथ किए गए अध्ययन एवं उनसे मिले फीडबैक के बाद ब्राण्ड अब लाईव आ गया है और बाजार में बदलाव लाने के लिए तैयार है। इस लॉन्च के साथ ब्राण्ड उन डी2सी प्लेयर्स में एक बन गया है जो भारतीय उपभोक्ताओं की त्वचा एवं बालों की देखभाल के लिए ऑस्ट्रेलियाई ककादू प्लम और जापानी कैमेलिया के शक्तिशाली फायदे लेकर आए हैं। इस घोषणा के साथ यूनीक प्रो साइंस ने जापानी कैमेलिया और जिजिफस जोजेरो की छाल के अर्क से बना स्पेशल एक्शन शैम्पू भी लॉन्च किया, जो रूसी को दूर कर स्कैल्प यानि सिर की त्वचा को ठंडक देता है। स्पेशल एक्शन शैम्पू सिर की त्वचा की खुजली, रूसी को दूर कर बालों को गहराई तक पोषण प्रदान करता है, जिससे बाल स्वस्थ दिखाई देते हैं। यूनीक प्रो साइंस का लॉन्च करते हुए और भारतीय बाजार के लिए हमारे आधुनिक प्रोडक्ट्स को लाते हुए हमें बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है।

## बॉम्बे शर्ट कंपनी की कोलकाता में वापसी

### पार्क स्ट्रीट क्षेत्र में 22वां स्टोर खोला

**संवाददाता**

**कोलकाता।** परिधान ब्रांड बॉम्बे शर्ट कंपनी ने देश में अपना 22वां स्टोर खोला है और कोलकाता में वापसी की है। उनका स्टोर पार्क स्ट्रीट क्षेत्र में स्थित है, जहां उनकी सभी श्रेणियों के वस्त्र उपलब्ध हैं और उनकी ग्राहक सेवा इस श्रेणी में सबसे बेहतरीन मानी जाती है। 2012 में भारत के पहले ऑनलाइन कस्टम-मेड शर्ट ब्रांड के रूप में शुरू हुआ, उन्होंने अपने विविध उत्पाद की पेशकश के लिए लहरें बनाई हैं, जिसमें अब कस्टम-मेड शर्ट के साथ-साथ रेडीमेड शर्ट, टेलर-मेड ब्लेजर, ड्रेस पैंट, जींस, चिनोस, परफॉरमेंस पैंट और टीशर्ट शामिल हैं। वे अपने कपड़े दुनिया भर की सबसे अच्छी मिलों से मंगवाते हैं, और उनके कलेक्शन में परिष्कृत औपचारिक विकल्पों से लेकर मजेदार कैजुअल विकल्पों और बीच की हर चीज शामिल है।

बॉम्बे शर्ट कंपनी अपने अनोखे और व्यक्तिगत इन-स्टोर शॉपिंग अनुभव के लिए जानी जाती है। आप अपनी कस्टम मेक शर्ट के लिए उनकी मैसिव कलेक्शन से कपड़ा चयन कर सकते हैं और फिर उनके इन हाउस दर्जी से फिट करवा सकते हैं। उनके स्टोर के स्टाइलिस्ट आपको वह कपड़ा चुनने में मदद करेंगे जो आपकी जरूरतों के हिसाब से सबसे अच्छा हो, और फिर आपको सही कस्टमाइजेशन जैसे कि कफ, कॉलर और बहुत कुछ चुनने में मदद करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप आपके लिए बनाया गया एक बेहद व्यक्तिगत उत्पाद तैयार होगा। वे अब रेडीमेड शर्ट भी पेश करते हैं जिनकी गुणवत्ता समान होती है लेकिन वे दोगुनी तेजी से शिप होते हैं। संस्थापक और सीईओ अक्षय नार्वेकर कहते हैं, भले ही पिछले 5 सालों से यहां हमारा कोई स्टोर नहीं खुला है, लेकिन हमारे वफादार ग्राहक बने हुए हैं। जब भी हम किसी स्टोर की घोषणा करते हैं, तो कोलकाता में हमारा समुदाय हमेशा यह जानने के लिए उत्सुक रहता है कि हम यहां कब स्टोर खोल रहे हैं, इसलिए मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि वह दिन आ गया है।

# मनरेगा मेटो का प्रशिक्षण शिविर का हुआ आयोजन

**चमकता राजस्थान**

रोहट उपखंड मुख्यालय पर आज पंचायत समिति सभागार में अतिरिक्त जिला कार्यक्रम समन्वयक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद पाली के निर्देशानुसार महात्मा गांधी नरेगा योजनाअंतर्गत नियोजित किए जा रहे महिला / पुरुष मेट तथा मेट बनने हेतु इच्छुक पात्र व्यक्तियों यथा महिला एवं पुरुष का एकदिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 4 जुलाई गुरुवार को प्रातः 11:00 बजे पंचायत समिति रोहट सभागार में रोहट, खांडी, सीनगारी, बिठु, सोनाई लाखा आदि ग्राम पंचायत के मनरेगा मेटो का प्रशिक्षण शिविर का रोहट विकास अधिकारी विक्रम सिंह राजपुरोहित की अध्यक्षता में महिला एवं पुरुष का एकदिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। मनरेगा के अंतर्गत मेटो को विभिन्न कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। मनरेगा में महिला श्रमिकों की भागीदारी बढ़ाने का भी जोर दिया गया। गौरतलब है कि हर ग्राम पंचायत में महिला मेट की नियुक्ति की जा रही है, प्रशिक्षण में लगभग 50 से अधिक मेट को उनके दायित्व, कार्य के प्रति जिम्मेदारी, नरेगा श्रमिक के साथ अपनापन सहित विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। जिले की करीब 50 प्रतिशत पंचायत में मनरेगा महिला मेट की तैनाती की जा रही है। कनिष्ठ तकनीकी सहायक मुकेश माथुर ने मेटो को नाडी खुदाई, पौधा रोपण, ग्रेवल सड़क कार्यों, झाड़ी कटिंग आदि का माप के बारे में विस्तृत जानकारी दी। और उन्होंने कहां की मिस्ट्रोल में पांच-पांच ग्रुप समूह अनुसार विभाजन कर कार्य करवाना, कार्य का माप करना, कार्य के समय हाजरी रजिस्टर करना, रोजगार जरूरतमंद परिवार को जोड़ एक जॉब कार्ड पर 100 दिन का रोजगार देने, मेट को कार्य स्थल पर समय पर पहुंचने के निर्देश भी दिए। और लेखा सहायक दीपक शाह ने बताया कि शिविर में श्रमिकों के जॉब कार्ड जारी करने श्रमिकों के रोजगार के लिए प्रपत्र 6 फॉर्म भरवाने, प्राप्ति रशीद देने, श्रमिक को ग्रुप टास्क अनुसार कार्य करवाने सहित कुल 11 कार्यों का प्रशिक्षण दिया गया। तथा लेखा सहायक जयश्री परमार ने बताया की श्रमिकों को ग्रुप अनुसार कतार में खड़े करके साफ तरीके से फोटो ले और किसी के बदले में फोटो ना ले, उनका नाप - चोप करना, श्रमिकों की उपस्थिति भरना, मेटो को मनरेगा कार्य स्थल पर श्रमिकों के लिए छाया, पानी, चिकित्सा एवं सरकार द्वा-रा दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। मेट अपनी जिम्मेदारी समझते हुए निष्ठा पूर्वक कार्य करें और मौके पर जितना कार्य किया गया हो उतना ही बताएं। कनिष्ठ तकनीकी सहायक मुकेश माथुर, लेखा सहायक दीपक शाह, जयश्री परमार, मनरेगा मेट संघ अध्यक्ष राजाराम सरगरा डूंगरपुर, भाजपा नेता नरपत सिंह राजपुरोहित, कनिष्ठ लिपिक सहायक कैलाश वैष्णव, मुकेश कुमारी, राजूराम, डूंगरराम, मेट नारायणराम, चंद्रराम, दलाराम, विरमाराम, इंदुखान, गोपीदेवी, मंजू, खुशबू, किरण, जशोदा, सुमन, आदि मौजूद थे।

## एक नजर

### प्रदेशभर में चलेगा एक पेड़ मां के नाम अभियान : योगी आदित्यनाथ

**लखनऊ।** उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पांच कालिदास मार्ग स्थित मुख्यमंत्री आवास पर पौधरोपण किया। इस अवसर पर प्रदेश के वन मंत्री डा.अरूण कुमार सक्सेना भी उपस्थित रहे। इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 20 जुलाई को पूरे प्रदेश में एक पेड़ मां के नाम अभियान चलाया जायेगा। इस दौरान प्रधानमंत्री आवास के लाभार्थियों के यहां भी पौधे लगाये जायेंगे। मुख्यमंत्री ने सभी घरों में सहजन के पेड़ लगाने का आह्वान करते हुए कहा कि हर कोई मां के नाम एक पेड़ जरूर लगाए। इस अभियान के लिए मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताया है।

### नेपाल में उप प्रधानमंत्री लामिछाने की राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी ने भी प्रचंड से किया किनारा

**काठमांडू।** नेपाल की केंद्रीय राजनीति में जारी उथल-पुथल के बीच प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचंड अलग-थलग पड़ते जा रहे हैं। अब उप प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री रवि लामिछाने की राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी ने भी उनसे किनारा कर लिया है। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी प्रचंड सरकार में शामिल तीसरी बड़ी पार्टी है। इस पार्टी के सरकार में शामिल चारों मंत्रियों ने सुबह अपने पद से इस्तीफा दे दिया। चारों ने सुबह प्रधानमंत्री से मुलाकात के बाद यह घोषणा की। प्रधानमंत्री से मुलाकात के बाद रवि लामिछाने ने कहा कि बदली हुई परिस्थिति के बीच हमने सरकार छोड़ने का फैसला किया है। उन्होंने साफ किया है कि नए गठबंधन में शामिल होने के लिए उनके पास कोई प्रस्ताव नहीं आया है।

### व्यापारी को डराकर वसूली के आरोप में पांच पुलिसकर्मी निलंबित

**मऊ।** जिले के पांच पुलिसकर्मियों को बुधवार को घूस लेने के आरोप में निलंबित कर दिया गया है। आरोपी पुलिस कर्मियों पर जिले के एक व्यापारी को डरा धमकाकर जबरन वसूली और फर्जी मुकदमे में फंसाने का आरोप है। अपर पुलिस अधीक्षक महेश अत्री ने मीडिया से बताया कि ग्राम महुआ थाना हलधरपुर के व्यापारी दिनेश गुप्ता ने शिकायत की थी कि 28 मई 2024 को उनकी पिकअप सामान भरकर मऊ जा रही थी। जैसे ही पिकअप सिकटिया पुल के पास पहुंची जहां थाना सारा लखंसी के दो सिपाही देव कुमार सोनकर और सुजीत यादव ने पिकअप को रोका और उसे थाना सरायलखन लेकर आए।

### जयशंकर की चीन के विदेशमंत्री से मुलाकात

**अस्ताना।** भारत के विदेशमंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कजाकिस्तान की राजधानी अस्ताना में चीन के विदेशमंत्री वांग यी से मुलाकात की। जयशंकर अस्ताना में शंघाई सहयोग संगठन के दो दिवसीय समिट में हिस्सा लेने पहुंचे हैं। विदेशमंत्री जयशंकर इस समिट में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। अस्ताना में तीन जुलाई से शुरू शंघाई सहयोग संगठन की यह 24वीं बैठक है। इस संगठन में भारत, चीन, पाकिस्तान और रूस समेत नौ देश शामिल हैं। इस बैठक में हिस्सा लेने के लिए रूस के राष्ट्रपति पुतिन, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ भी पहुंचे हैं। इससे पहले भारत के विदेश मंत्रालय ने नई दिल्ली में बयान जारी कर बताया कि भारत का जोर सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, सहयोग, संपर्क, एकता, संप्रभुता का सम्मान, क्षेत्रीय एकता और पर्यावरण सुरक्षा पर है।

### हमीरपुर में केंद्रीय एजेंसियों की छापेमारी

**हमीरपुर।** मुख्यमंत्री के गृह जिले हमीरपुर में उपचुनाव के बीच रेड का खेल शुरू हो गया है। जिले में एक सप्ताह के भीतर आयकर विभाग ने दूसरी बार छापेमारी की है। मिली जानकारी के मुताबिक वीरवार सुबह आयकर विभाग की टीमों ने नादौन में तीन ठेकेदारों के घरों और उनके व्यवसायिक संस्थानों पर छापेमारी की है। इनके घरों और व्यवसायिक संस्थानों के बाहर सीपीआरफ के जबान तैनात हैं। बताया जा रहा है कि तीनों स्टोन क्रेशर का काम साझेदारी में करते हैं। विभाग की टीमें ठेकेदारों से पूछताछ कर रही है और रिकॉर्ड को खंगाल जा रहा है।

### शराब तस्करी के आरोप में एक गिरफ्तार

**कुल्लू।** थाना पतलीकुहल के अंतर्गत पुलिस ने शराब की बड़ी खेप बरामद की है जिसे अवेध रूप से ले जाया जा रहा था। शराब तस्करी का मामला उस दौरान सामने आया जब पुलिस दल पतली कुहल स्थित फ्रूट मार्किट के समीप नाका पर मौजूद था। पुलिस ने सामने से आ रही पिक अप गाड़ी एचपी 65 - 5405 को जांच के लिए रोका गया। जांच के दौरान गाड़ी में भारी मात्रा में शराब पाई गई। पुलिस ने चालक से शराब का परमिट दिखाने के लिए कहा गया लेकिन चालक के पास शराब से संबधित कोई दस्तावेज नहीं था। पुलिस ने शराब की खेप को कब्जे में ले लिया।

# पंचायतों को वित्तीय स्वायत्तता से गांवों में विकास की रफ्तार बढ़ेगी: कंवर पाल

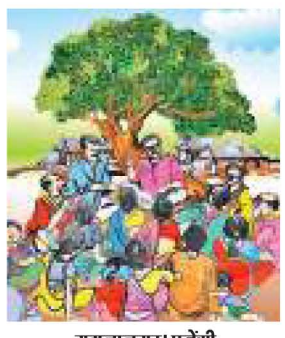

यमुनानगर। एजेंसी

- गांव की सरकार लोकतंत्र की सशक्त तस्वीर है
- मोदी के वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विकसित होना जरूरी है

हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री कंवरपाल ने सरपंचों को बिना टेंडर के 21 लाख रुपये तक के विकास कार्य करवाने की मंजूरी देने पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जमीनी स्तर की सरकार को प्रशासनिक और वित्तीय स्वायत्ता प्रदान करके हमारी सरकार ने ग्रामीण विकास की गति को बढ़ाया है। कृषि मंत्री कंवरपाल गुरुवार को यहां पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प के तहत वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में पंचायती राज संस्थाओं को सुदृढ़ करना अति आवश्यक है। इसी कड़ी में हरियाणा सरकार माइक्रो लेवल पर प्लानिंग करके पंचायतों को सशक्त कर रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने ग्रामीण क्षेत्र में तैनात सफाई कर्मचारियों और नगरपालिका के सफाई कर्मचारियों के मासिक मानदेय में भी बढ़ोतरी की है।

उन्होंने कहा कि गांव की सरकार लोकतंत्र की सशक्त तस्वीर है। प्रधानमंत्री मोदी के वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रत्येक गांव का विकसित होना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि गांव में विकास को गति देने के लिए प्रदेश सरकार की तरफ से धन की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती सरकारें गांव के विकास के लिए पैसा खर्च करने से बचती थी।

जहां वर्ष 2014 से पहले पंचायतों के लिए राज्य वित्त आयोग का अनुदान 600 करोड़ रुपये था, वहीं हरियाणा के लिए अनुदान की इस राशि को बढ़ाकर 2968 करोड़ रुपये किया गया है। इतना ही नहीं, वित्त वर्ष 2024-25 के बजट में ग्रामीण विकास के लिए 7276.77 करोड़ रुपये आवंटित किये गए हैं, जबकि पूर्व की सरकार में 2013-14 के दौरान यह राशि 1898.48 करोड़ रुपये थी।

## वित्तीय संकट और कानून व्यवस्था की हालत बदतर : डॉ राजीव बिंदल

धर्मशाला। एजेंसी

देहरा विधान सभा क्षेत्र के विभिन्न बूथों की बैठकें करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजीव बिन्दल ने दावा किया कि देहरा की जनता ने ठान लिया है कि भाजपा प्रत्याशी होशियार सिंह को ही देहरा का विधायक बनाएंगे।

डॉ बिन्दल ने वीरवार को कहा कि वर्तमान कांग्रेस सरकार के राज में डेढ़ साल में हिमाचल प्रदेश अधोगति की ओर गया है। हिमाचल की कानून व्यवस्था की धज्जियां उड़ाई जा रही है। प्रदेश के इतिहास में ऐसा अवसर कभी नहीं आया कि एक महीने के अंदर हिमाचल में अनेक-अनेक स्थानों पर योजनाबद्ध तरीके से गोलीबारी की घटनाएं हुई हो। इन गोलीबारी की घटनाओं के पीछे बड़े-बड़े माफिया गैंग्स का हाथ है और हिमाचल लगातार चिट्टा माफिया, ड्रग माफिया, कबाड़ माफिया के शिकंजे में कसता जा रहा है और इस प्रकार की लचर कानून व्यवस्था के लिए केवल और केवल मुख्यमंत्री सुखविन्द्र सिंह की सरकार जिम्मेवार है।

उन्होने कहा कि डेढ वर्ष के सुक्खू शासन में प्रदेश की आर्थिक स्थिति बद से बदतर हुई है। 30 हजार करोड़ का कर्ज वर्तमान सरकार ले चुकी है और नौ हजार करोड़ का कर्ज इस महीने लेने जा रही है। इसके बावजूद पूरे प्रदेश के विकास कार्य बंद हो चुके हैं। सेवानिवृत कर्मचारियों, अधिकारियों के मैडिकल बिल व अन्य देनदारियां पूरी तरह से बंद पड़ी हैं। पूरे प्रदेश में पीने के पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है, सड़कें गड्ढों में तबदील हो चुकी हैं और बिजली का कट आम बात हो गई है।

## हिंदू अल्पसंख्यक न हों इसके लिए जनसंख्या नियंत्रण कानून लागू होना जरूरी : अनिल

मुरादाबाद। एजेंसी

सरस्वती शिशु मन्दिर बनबटा गंज में गुरुवार को जनसंख्या नियंत्रण कानून लागू करने हेतु जिला बैठक का आयोजन हुआ। इसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल चौधरी ने कहा कि हिन्दूओं की जनसंख्या घट रही है। एक समुदाय विशेष की जनसंख्या वृद्धि दर तेजी से बढ़ रही है। इसे रोकना होगा नहीं तो भयानक परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा। हम अपने पूर्वजों की वंशावली नहीं जानते जैसे लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप, भगत सिंह, चन्द्रशेखर के पिता, दादाजी कौन थे किन्तु अकबर की सब जानते हैं। हमारे असली इतिहास को छुपा कर तथाकथित विधर्मी आक्रमणकारियों को योद्धा और झूठे गुणों को बखान कर सब उल्टा पढ़ाया गया।

कार्यक्रम में कश्मीर से पहुंचीं ममता सहगल ने कहा कि 1990 में धार्मिक स्थलों से घोषणा कि गई कि काफिरों चौबीस घंटे के अन्दर काश्मीर छोड़ कर चले जाओ। अपनी लड़कियों और सम्पत्ति को यहीं छोड़ जाओ। मैं तेरह वर्ष की आयु में सीमेंट के ट्रक में छुपकर आई। लाखों लोगों को पलायन करना पड़ा। हम काश्मीर से इधर आ गये। यही हाल रहा तो आप कहां जाओगे। इस मौके पर कथावाचक आचार्य धीरशांत अर्द्धमौनी, समीर विधार्थी, डॉ. विजय लक्ष्मी पंडित, समीर विद्यार्थी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। वक्ताओं ने राष्ट्रीय स्तर पर 11 जुलाई को पूर्वाह्न 11 बजे से अपराह्न 3 बजे तक कलैक्ट्रेट पर विशाल धरना प्रदर्शन किया जाएगा।

बैठक में कविता सिरोही, हेमा शारदा, शीतल राजपूत, अवनीश चौहान, अमित गुप्ता, पुलकित विधार्थी, अखिलेश्वर निगम, अग्रिम गुप्ता, जवाहर टण्डन, नरेश गुप्ता, विपिन रस्तोगी, हर्ष रौतेला, रचना अग्रवाल, सुनीता देवी, क्षमा रानी, राकेश कुमार, संतोष गुप्ता, गोविन्द सिंह, कंचन अग्रवाल, पिंकी यादव, ज्योति सैनी, स्वाति राजपाल आदि उपस्थित रहे।

## महिला अपराध को लेकर राज्य के जनपद प्रभारियों को डीजीपी का सख्त निर्देश

देहरादून। एजेंसी

महिलाओं की सुरक्षा को लेकर धामी सरकार के साथ उत्तराखंड पुलिस संकल्पित है। ऐसे में उत्तराखंड में महिलाओं के साथ अपराध पर अब अपराधियों की खैर नहीं है। अपराधी चाहे पुलिस कर्मी ही क्यों न हो, पुलिस सख्त कार्रवाई करेगी और सबक सिखाएगी। संलिप्तता पाए जाने पर पुलिसकर्मी भी नपेंगे।

पुलिस महानिदेशक उत्तराखंड अभिनव कुमार ने कहा है कि महिलाओं से दुर्व्यवहार अथवा अनैतिक कार्यों में किसी भी पुलिस कर्मी की संलिप्तता किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। संबंधित के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर कठोर कार्रवाई की जाएगी। इसके लिए पुलिस महानिदेशक ने राज्य के सभी जनपद प्रभारियों को सख्त निर्देश दिए हैं। पुलिस महानिदेशक ने समस्त जनपद प्रभारियों को निर्देश दिए हैं कि महिला सुरक्षा उत्तराखंड पुलिस की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। पुलिस कार्मिकों द्वारा महिलाओं से दुर्व्यवहार अथवा अनैतिक कार्यों में पुलिस बल की संलिप्तता यदि परिलक्षित होती है तो इन घटनाओं से जहां एक ओर संपूर्ण पुलिस विभाग की छवि धूमिल होती है, वहीं आमजन व महिलाओं में प्रतिकूल संदेश प्रसारित होता है। इससे पुलिस विभाग की कार्यप्रणाली भी प्रभावित होती है। ऐसे में महिलाओं अथवा बालिकाओं के साथ दुर्व्यवहार या अनैतिक कार्यों में संलिप्तता पर संबंधित के विरुद्ध सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजीकृत कर वैधानिक कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

## विद्यार्थी वर्ष के रूप में मनेगा वर्तमान शैक्षिक सत्र : बंशीधर तिवारी

**देहरादून। विद्यालयी शिक्षा महानिदेशक बंशीधर तिवारी ने गुरुवार को कहा कि उत्तराखंड शिक्षा विभाग वर्तमान शैक्षिक सत्र को विद्यार्थी वर्ष के रूप में मनाने जा रहा है। उन्होंने बताया कि शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत की ओर से इस संबंध में दिशा निर्देश दिए गये हैं। बंशीधर तिवारी ने बताया कि प्राथमिक शिक्षा के सशक्तीकरण के लिए विशेष प्रयास किया जाएगा। इसके तहत स्कूलों में तीन हजार से ज्यादा शिक्षकों की भर्ती की प्रक्रिया शुरू की जा चुकी है। अब स्कूलों में संसाधनों के विकास पर फोकस रहेगा। इसके तहत शिक्षकों के अंतरमंडलीय तबादले, तबादला प्रक्रिया में काउंसलिंग, अटल स्कूलों में तैनातियां, डायट में पदस्थापना समेत कई मांगों पर सरकार कार्य कर चुकी है। यात्रावकाश की बहाली के लिए प्रस्ताव मांग लिया गया है। उन्होंने बताया कि निःशुल्क पुस्तक वितरण योजना को भी बोर्ड परीक्षा की तरह बेहतर किया जाएगा।**

## शिमला : परिवारवाद पर कांग्रेस आत्म-निरीक्षण करे : शान्ता कुमार

शिमला। एजेंसी

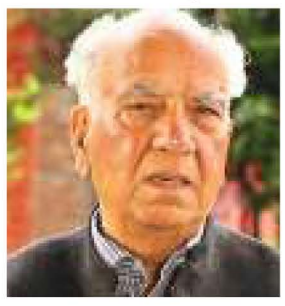

राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री शान्ता कुमार ने कहा कि कुछ कांग्रेस नेताओं की तरफ से मुझ पर परिवारवाद का आरोप लगाया गया है। स्वस्थ राजनीति का सिद्धान्त यह है कि पार्टी में महत्वपूर्ण पद और चुनाव का टिकट कार्यकर्ता को ही मिलना चाहिए। कार्यकर्ता की परिभाषा यह है कि जो कुछ समय से पार्टी में प्रमुखता से काम कर रहा हो। ऐसा टिकट प्राप्त करने वाला कार्यकर्ता किसी नेता का सम्बंधी भी हो सकता है लेकिन यह परिवारवाद नहीं है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को अपने परिवारवाद का आत्म निरीक्षण करना चाहिए। भाजपा के वरिष्ठ नेता शान्ता कुमार ने गुरुवार को एक बयान जारी कर कहा कि कांगड़ा-चम्बा क्षेत्र से डॉ. राजीव भारद्वाज लोकसभा के सदस्य बने हैं। राजीव पिछले 37 साल से एक समर्पित कार्यकर्ता की तरह पार्टी के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने कई सालों तक युवा मोर्चा में काम किया, फिर युवा मोर्चा के प्रदेशाध्यक्ष बने। शांता कुमार ने कहा कि मैं जब कांगड़ा-चम्बा लोकसभा का सांसद था तब चम्बा जिले की पूरी जिम्मेदारी राजीव भारद्वाज ही सम्भालते थे। पार्टी ने उन्हें 37 साल से काम करने वाले एक समर्पित कार्यकर्ता के रूप में टिकट दिया, केवल मेरा सम्बन्धी होने के कारण नहीं दिया। यह मेरा सौभाग्य है कि डॉ भारद्वाज मेरे सम्बन्धी हैं। यहीं कसौटी है परिवारवाद की। मुझ पर आलोचना करने वाले नेताओं को इस कसौटी पर आत्म निरीक्षण करना चाहिए। शान्ता कुमार ने कहा कि प्रेम कुमार धूमल के पुत्र अनुराग ठाकुर भी इसी कसौटी पर खरे उतरते हैं।

# केंद्रीय कोयला मंत्री ने निर्माण पोर्टल किया लॉन्च, मिलेगी एक लाख की सहायता

- प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर उम्मीदवारों एक लाख रुपये की सहायता प्रदान करना है

वरीय संवाददाता

**रांची।** केन्द्रीय कोयला और खान मंत्री किशन रेड्डी ने नई दिल्ली में राष्ट्रीय सिविल सेवा परीक्षा की मुख्य परीक्षा के उम्मीदवारों को पुरस्कृत करने के लिए नोबेल पहल पोर्टल निर्माण 3 जुलाई को लॉन्च किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मिशन कर्मयोगी दृष्टिकोण के अनुरूप कोल इंडिया द्वारा अपने परिचालन जिलों के मेधावी युवाओं के लिए एक अनूठी निगमित सामाजिक दायित्व (सीएसआर) योजना है, जिन्होंने 2024 में यूपीएससी परीक्षा (सिविल सेवा और वन सेवा के लिए) के प्रारंभिक दौर में अर्हता प्राप्त की है। इस अवसर पर कोयला मंत्रालय के सचिव अमृत लाल मीणा, अन्य वरिष्ठ अधिकारी और कोयला कंपनियों के सीएमडी उपस्थित थे।

इस योजना का उद्देश्य कोल इंडिया के 39 आपरेशनल जिलों में से 8 लाख से कम वार्षिक पारिवारिक आय वाले किसी भी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, महिला या तीसरे लिंग से संबंध रखने वाले स्थायी निवासी द्वारा प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर उन्हें एक लाख रुपये की सहायता प्रदान करना है। आवेदनों की पूर्ण पारदर्शिता और निर्बाध स्क्रीनिंग सुनिश्चित करने के लिए पूरी आवेदन प्रक्रिया एक समर्पित पोर्टल के माध्यम से होती है, जिससे प्रधानमंत्री के डिजिटल इंडिया का सपना पूरा होता है। कोयला मंत्रालय की सीपीएसई, कोल इंडिया लिमिटेड एक महारत्न कंपनी है जो न केवल देश की ऊर्जा सुरक्षा की रीढ़ है, बल्कि कोयला धारक क्षेत्रों में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक सामाजिक रूप से जिम्मेदार कारपोरेट की महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाती है।

सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास द्वारा विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कोल इंडिया और इसकी सहायक कंपनियों ने कोयला क्षेत्रों के योग्य और वंचित छात्रों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित व्यावसायिक संस्थानों में प्रवेश सुरक्षित करने में मदद करने के लिए विभिन्न पहल की है। सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास द्वारा विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कोल इंडिया और इसकी सहायक कंपनियों ने कोयला क्षेत्रों के योग्य और वंचित छात्रों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित व्यावसायिक संस्थानों में प्रवेश सुरक्षित करने में मदद करने के लिए विभिन्न पहल की है।

## योजना

**आर्किटेक्ट टीम सर्वे कर योजना बना सरकार के समक्ष प्रस्तुत करेगी**

# उप्र के 75 गांवों में होंगे पर्यटन विकास के कार्य

कुशीनगर। एजेंसी

- पिपराझाम में मंदिर और पोखरा, मिट्टी, मूंज व बांस से विभिन्न प्रकार के सामान बनाने वाले शिल्पकार हैं

भारत सरकार के केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने ग्रामीण पर्यटन विकास योजना के तहत प्रदेश के 75 गांवों का चयन किया है। इनमें कुशीनगर जनपद के कुड़वा दिलीपनगर व पिपराझाम का चयन हुआ है। जल्द ही आर्किटेक्ट टीम इन गांवों में पहुंचकर सर्वे आदि कर योजना बना सरकार के समक्ष प्रस्तुत करेगी। कसया के कुड़वा दिलीपनगर में कुलकुला देवी स्थान, तीन नदियों-हिरण्यवती, कुकुत्था व सोनरा का संगम, दो सौ एकड़ का जंगल, कुड़वा दिलीप नगर के पूर्व जमींदार परिवार की नई पर्यटन नीति में हेरिटेज होटल के लिए प्रस्तावित 150 वर्ष पुरानी हवेली, केले की खेती, प्राचीन परंपरागत विधि से विविध प्रकार के घरेलू व कृषि में उपयोग में आने वाले उपकरण बनाने वाले लोहार, मूंज से सामान बनाने वाले शिल्पकारों को शामिल किया गया है। जबकि पिपराझाम में मंदिर और पोखरा, मिट्टी, मूंज व बांस से विभिन्न प्रकार के सामान बनाने वाले शिल्पकार हैं। इसी तरह विविधता समेटे अन्य जिलों के गांव शामिल हैं।

आर्किटेक्ट टीम इन्हें भारतीय व विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण बनाने के लिए कार्य करेगी। योजना के तहत शिल्पकारों की बेहतरी के लिए संसाधन भी उपलब्ध कराया जाएगा। केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा इन गांवों का प्रचार-प्रसार किया जाएगा ताकि पर्यटक यहां तक आ सकें। क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी रविंद्र मिश्र ने बताया कि जल्द ही भारत सरकार द्वारा गठित आर्किटेक्ट टीम इन गांवों का दौरा कर योजना तैयार करने का कार्य करेगी। इसके लिए आर्किटेक्ट नियुक्त कर दिए गए हैं।

**गत वर्ष हुआ था चयन**

भारत सरकार के केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा ग्रामीण पर्यटन विकास को लेकर बेस्ट विलेज काम्पिटिशन में गांवों का चयन किया गया था। पर्यटन विभाग कृषि एवं ग्राम्य पर्यटन की अवधारणा को साकार करने के लिए इन गांवों में आधारभूत संसाधनों का विकास करेगा।

## भारत की सीमा के पास चीन को मिला तेल और गैस की खोज के लिए कुआं खोदने का काम

ढाका। एजेंसी

भारत-बांग्लादेश जैसे दो बेहद दोस्ताना ताल्लुकात वाले मुल्कों के बीच चीन ने सेंध लगा दी है। बांग्लादेश में चीन भारत की सीमा के पास तेल और गैस की खोज के लिए कुआं खोदने का काम पाने में कामयाब हो गया। चीन के सिनोपैक इंटरनेशनल पेट्रोलियम सर्विस कॉरपोरेशन को असम के सीमावर्ती शहर करीमगंज के पास सिलहट-11 और त्रिपुरा के खोई शहर के पास हबीगंज जिले में रशीदपुर-13 में पेट्रोलियम गैस निकालने के लिए कुओं की ड्रिलिंग का काम मिला है। इस पर 444 करोड़ 85 लाख 79 हजार 893 टका खर्च होने का अनुमान है। बांग्लादेश के वित्तमंत्री अबुल हसन महमूद अली की अध्यक्षता में बांग्लादेश के सचिवालय में कल आयोजित सरकारी क्रय संबंधित कैबिनेट समिति की बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। बैठक के अंत में कैबिनेट विभाग के समन्वय एवं सुधार सचिव मो. महमूदुल हुसैन खान ने संवाददाताओं को बताया कि सिलहट-11 और रशीदपुर-13 में पेट्रोलियम की निकासी के लिए कुएं, बिजली और ऊर्जा अधिनियम 2010 के अनुसार खोदे जाएंगे।

इस संबंध में सिलहट गैस फील्ड्स लिमिटेड (एसजीएफएल) और सिनोपैक इंटरनेशनल पेट्रोलियम सर्विस कॉरपोरेशन के बीच समझौते को पूरा करने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया गया है। इसे जल्द ही अंतिम रूप दे दिया जाएगा।

## एक नजर

### बोपन्ना-एबडेन की जोड़ी दूसरे दौर में पहुंची

**लंदन।** भारत के शीर्ष टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना और उनके ऑस्ट्रेलियाई जोड़ीदार मैथ्यू एबडेन ने डच जोड़ी रॉबिन हासे और सैंडर एरेन्ड्स को हराकर विंबलडन पुरुष युगल स्पर्धा के दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया है। ऑस्ट्रेलियन ओपन चैंपियन बोपन्ना-एबडेन ने बारिश के व्यवधान के बावजूद एक घंटे और 11 मिनट तक चले मुकाबले में अपने डच प्रतिद्वंद्वियों को 7-5, 6-4 से हराया। बोपन्ना और एबडेन दूसरे दौर में हेंड्रिक जेबेंस और कॉन्स्टेंटिन फ्रैंटजेन की जर्मन जोड़ी से भिड़ेंगे। हालांकि, सुमित नागल का अभियान बुधवार को अपने सर्बियाई जोड़ीदार डुसन लाजोविच के साथ पुरुष युगल के पहले दौर के मैच में हारने के बाद खत्म हो गया। इस जोड़ी को स्पेन के पेड्रो मार्टिनेज और जौम मुनार ने 6-2, 6-2 से हराया। इससे पहले, नागल को विंबलडन में अपने पहले मुख्य ड्रॉ में पुरुष एकल के पहले दौर से बाहर होना पड़ा था।

### सुपरबेट क्लासिक शतरंज, राउंड 7: गुकेश ने कारुआना को ड्रॉ पर रोका

**बुखारेस्ट।** विश्व चैम्पियनशिप चैलेंजर ग्रैंडमास्टर डी. गुकेश ने यहां सुपरबेट क्लासिक शतरंज टूर्नामेंट के सातवें दौर में टूर्नामेंट लीडर और शीर्ष वरीयता प्राप्त संयुक्त राज्य अमेरिका के फैबियानो कारूआना के साथ ड्रॉ खेला। 4.5 अंकों के साथ कारूआना दो जीत और पांच ड्रॉ के साथ शीर्ष पर बने हुए हैं, उनके बाद गुकेश, प्रज्ञानानंदा और फ्रांस के अलीरेजा फिरोजा हैं, जो सभी कारूआना से आधे अंक पीछे हैं। नेपोमनियाचची पचास प्रतिशत अंकों के साथ फ्रांस के मैक्सिम वचियर-लाग्रेव के साथ पांचवें स्थान पर हैं, जो अमेरिकी वेस्ली सो, अनीश गिरी और उज्बेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसत्तोरोव से आधा अंक आगे हैं। 350000 अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि वाले इस टूर्नामेंट में अब केवल दो राउंड बचे हैं। गुकेश के इतालवी ओपनिंग के चयन ने उन्हें कारुआना के खिलाफ बढ़त दिलाई। शुरूआती संघर्ष के बाद, खिलाड़ी मध्य गेम में पहुंच गए।

### गत चैंपियन कार्लोस अल्काराज विंबलडन के तीसरे दौर में पहुंचे

**लंदन।** गत चैंपियन कार्लोस अल्काराज ने बुधवार को यहां अलेक्जेंडर वुकिक को सीधे सेटों में हराकर विंबलडन चैंपियनशिप के पुरुष एकल के तीसरे दौर में प्रवेश किया। 21 वर्षीय अल्काराज ने पहले सेट में अपने ऑस्ट्रेलियाई प्रतिद्वंद्वी की कड़ी चुनौती का सामना किया और दुनिया के 69वें नंबर के खिलाड़ी को 7-6(5), 6-2, 6-2 से शिकस्त दी। यह मुकाबला एक घंटे 48 मिनट तक चला।। तीसरे वरीयता प्राप्त स्पेनिश खिलाड़ी का सामना शुक्रवार को तीसरे दौर में अमेरिकी फ्रांसेस टियाफो से होगा। दुनिया के 29वें नंबर के खिलाड़ी टियाफो ने क्रोएशिया के बोर्ना कोरिक को सीधे सेटों में हराया। 2022 यूएस ओपन के सेमीफाइनल में पांच सेटों में टियाफो को हराने वाले अल्काराज ने कहा यह मैच खेलने और देखने में वाकई मजेदार होने वाला हैमैं मैच में अपनी अच्छी ताकत लगाने की कोशिश करूंगा और उसे हराने की कोशिश करूँगा। दुनिया के नंबर 1 इटली के जननिक सिनर ने हमवतन पूर्व विंबलडन उपविजेता मैटेओ बेरेटिनी को हराया।

### कोपा अमेरिका: इक्वाडोर के खिलाफ क्वार्टर फाइनल में मेसी का खेलना संदिग्ध

**ह्यूस्टन।** अजेर्टीना के स्टार खिलाड़ी और कप्तान लियोनेल मेसी का इक्वाडोर के खिलाफ कोपा अमेरिका क्वार्टर फाइनल में खेलना संदिग्ध है। अजेर्टीना के मैनेजर लियोनेल स्कोलोनी ने बुधवार को कहा कि वह इस बात पर अंतिम क्षण तक इंतजार करेंगे कि मेसी इक्वाडोर के खिलाफ कोपा अमेरिका क्वार्टर फाइनल में खेलेंगे या नहीं। मेसी को चिली पर 1-0 की जीत में चोट लगी थी और शनिवार को अपने अंतिम ग्रुप मैच में पेरू पर अपनी टीम की 2-0 की जीत में भी वह नहीं खेल पाए थे। टेक्सास के ह्यूस्टन में एनआरजी स्टेडियम में गुरुवार को होने वाले मुकाबले से पहले स्कोलोनी ने संवाददाताओं से कहा हम निर्णय लेने के लिए थोड़ा और इंतजार करेंगे। उन्होंने कहा हम एक और प्रशिक्षण सत्र लेंगे, कल उन्होंने सभी के साथ अच्छी भावना के साथ प्रशिक्षण लिया और अगला सत्र कैसा रहा, इसके आधार पर हम निर्णय लेंगे।

# शुभमन गिल सहित भारतीय टीम के खिलाड़ियों ने किया अभ्यास

**हरारे। एजेंसी**

कप्तान शुभमन गिल सहित भारतीय टीम ने जिम्बाब्वे के खिलाफ 6 जुलाई से शुरू होने वाली टी20 सीरीज को देखते हुए जमकर नेट अभ्यास किया है। भारतीय टीम को इस सीरीज में पांच मैच खेलने हैं। टीम में अधिकतर युवा खिलाड़ी शामिल हैं क्योंकि टी20 विश्वकप टीम में शामिल अनुभवी खिलाड़ियों को आराम दिया गया है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के अनुसार सभी मैच हरारे में खेले जाएंगे। इस दौरे में पूर्व क्रिकेटर

वीवीएस लक्ष्मण मुख्य कोच की भूमिका निभाएंगे। टीम में तीन नए खिलाड़ियों साई सुदर्शन, जितेश शर्मा और हर्षित राणा को संजू सैमसन, शिवम दुबे और यशस्वी जायसवाल की जगह शामिल किया गया है। ऐसे में इस सीरीज में शामिल युवाओं के पास बेहतर प्रदर्शन कर अपने को साबित करने का अवसर है।

भारतीय टीम इस दौरे में पांच मैच 6 जुलाई , 7 जुलाई , 10 जुलाई , 13 जुलाई और 14 जुलाई को खेलेगी। ये सभी मैच हरारे में होंगे।

**टीम इस प्रकार है :**

शुभमन गिल (कप्तान), रुतुराज गायकवाड़, अभिषेक शर्मा, रिंकू सिंह, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रियान पराग, वाशिंगटन सुंदर, रवि बिश्नोई, अवेश खान, खलील अहमद, मुकेश कुमार, तुषार देशपांडे, साई सुदर्शन , जितेश शर्मा (विकेटकीपर), हर्षित राणा।

## विश्व कप जीत के बाद दिल्ली पहुंची टीम इंडिया, एयरपोर्ट पर जोरदार स्वागत

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम बारबाडोस में टी-20 विश्व कप का खिताब जीतने के बाद गुरुवार सुबह दिल्ली पहुंची। अपने पसंदीदा खिलाड़ियों को बधाई देने वाले तख्तियां पकड़े और राष्ट्रीय ध्वज लहराते हुए सैकड़ों प्रशंसक विजयी खिलाड़ियों का स्वागत करने के लिए इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के बाहर एकत्र हुए। इस बीच, बीसीसीआई ने एक्स पर लिखा, यह घर है #टीमइंडिया। गुरुवार शाम को टीम के मुंबई के लिए रवाना होने की उम्मीद है। इसके बाद टीम एक ओपन बस रोड शो में हिस्सा लेगी, जिसके बाद मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में सम्मान समारोह होगा। भारतीय टीम को 11 बजे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भी मिलने का कार्यक्रम है। इससे पहले, विश्व कप विजेता कप्तान रोहित शर्मा ने भारतीय प्रशंसकों को एक विशेष संदेश दिया, जिसमें उन्होंने गुरुवार को मरीन ड्राइव और मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में विजय परेड में शामिल होने के लिए उत्साही समर्थकों को आमंत्रित किया, ताकि मेन इन ब्लू की आईसीसी टी20 विश्व कप की जीत का जश्न मनाया जा सके। मेन इन ब्लू ने फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को सात रन से हराकर अपना दूसरा आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप जीता। रोहित की अगुवाई वाली टीम जश्न मनाने के लिए शाम 5:00 बजे से मुंबई के मरीन ड्राइव और प्रतिष्ठित वानखेड़े स्टेडियम में खुली छत वाली बस की सवारी करेगी।

## संजू सैमसन ने टीम इंडिया की विशेष जर्सी का किया अनावरण

**नई दिल्ली। एजेंसी**

भारत के विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन ने गुरुवार को टीम इंडिया के पुरुष टी20 विश्व कप की जीत के उपलक्ष्य में डिजाइन की गई एक विशेष जर्सी की पहली झलक साझा की।

रोहित शर्मा की अगुआई वाली भारतीय क्रिकेट टीम गुरुवार को विशेष रूप से व्यवस्थित चार्टर फ्लाइट से स्वदेश लौटी, जहां उसका शानदार स्वागत किया गया। मौसम और सुरक्षा उपायों की परवाह किए बिना हजारों उत्साही प्रशंसक अपने चैंपियन का स्वागत करने के लिए नई दिल्ली हवाई अड्डे पर एकत्र हुए। जश्न का माहौल तब साफ दिखाई दे रहा था जब टीम ने आईटीसी मौर्य होटल जाने से पहले उत्साही दर्शकों के सामने टी20 विश्व कप ट्रॉफी दिखाई। सैमसन द्वारा इंस्टाग्राम पर शेयर की गई तस्वीर में, नई जर्सी में एक महत्वपूर्ण बदलाव किया गया है: बीसीसीआई लोगो के ऊपर एक दूसरा सितारा लगाया गया है, जो भारत की दूसरी टी20 विश्व कप जीत का प्रतीक है। जर्सी के सामने की तरफ गर्व से चैंपियंस शब्द लिखा हुआ है, जो टीम की कड़ी मेहनत से मिली जीत की याद दिलाता है। जर्सी में लगा पहला सितारा 2007 में एमएस धोनी की कप्तानी में भारत की पहली टी20 विश्व कप जीत की याद दिलाता है।

### रोहित, सूर्या, दुबे और यशस्वी को किया जाएगा सम्मानित

**मुंबई। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा, सूर्यकुमार यादव, शिवम दुबे और यशस्वी जायसवाल को शुक्रवार को महाराष्ट्र विधान भवन में सम्मानित किया जाएगा। शिवसेना विधायक प्रताप सरनाईक के सुझाव के जवाब में स्पीकर राहुल नार्वेकर ने कहा इन खिलाड़ियों को निमंत्रण भेजा गया है, जो मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से भी मिलेंगे। नार्वेकर ने सोशल मीडिया एक्स पर विधान भवन में इससे संबंधित चर्चा का वीडियो भी पोस्ट किया है। महाराष्ट्र विधानमंडल के दोनों सदनों ने आईसीसी विश्व कप जीतने के लिए भारतीय क्रिकेट टीम को बधाई देने वाले प्रस्ताव पहले ही पारित कर दिए हैं। सरनाईक ने कहा कि वे सम्मान समारोह में सभी विधायकों की उपस्थिति के लिए अध्यक्ष से अनुरोध करेंगे। सरनाईक ने कहा कि शर्मा, यादव, दुबे और जायसवाल मुंबई से हैं और यह मुंबईवासियों के लिए गर्व का क्षण है।**

## रोहित ने हमें दबाव में शांत बने रहकर खेलना सिखाया : सूर्यकुमार

**नई दिल्ली। एजेंसी**

भारतीय क्रिकेट टीम के आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव टी20 विश्वकप टूर्नामेंट में मिली खिताबी जीत से बेहद उत्साहित हैं। ट्रॉफी हाथ में लिए हुए सूर्यकुमार ने कप्तान रोहित शर्मा की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने हमें दबाव का सामना करना सिखाया है। सूर्यकुमार ने कहा कि उन्होंने हम सभी को सिखाया है कि दबाव में कैसे शांत रहना है।

वह स्वयं भी हमेशा शांत बने रहे। उन्होंने हमसे कहा कि हम ज्यादा आगे के बारे में न सोचें। हमारा एक आदर्श वाक्य भी था- अपना दिमाग वहीं रखें जहां आपके पैर हैं। रोहित ने हमें कहा कि सुपर 8 या सेमीफाइनल या फाइनल के बारे में नहीं सोचना चाहिए पर मैच को उसके अनुसार खेलना चाहिये। हमें एक समय में एक कदम उठाने की जरूरत थी और उन्होंने हमें दिखाया कि इस छोटे प्रारूप में कैसे बल्लेबाजी करनी है। साथ ही कहा कि अगर मैं रोहित के बारे में बताना शुरू करु तो मुझे काफी दिन लग जाएंगे। सूर्यकुमार ने विश्वकप में शानदार प्रदर्शन करते हुए 8 मैचों में 28.42 की औसत से 199 रन बनाए। इसमें दो अर्धशतक थे। इसके अलावा फाइनल के अंतिम ओवर में उन्होंने डेविड मिलर का एक बेहद अहम कैच पकड़कर भारतीय टीम की जीत तय कर दी थी।

## भारतीय पुरुष हॉकी टीम से मिले स्पेशल ओलंपिक भारत के एथलीट

**बेंगलुरु। एजेंसी**

स्पेशल ओलंपिक भारत के कर्नाटक चैप्टर के यूनिफाइड एथलीटों के एक दल ने बुधवार को भारतीय पुरुष हॉकी टीम से मुलाकात की, जो आगामी पेरिस ओलंपिक की तैयारी के लिए वर्तमान में बेंगलुरु के साई सेंटर में प्रशिक्षण ले रही है। इस दौरे ने स्पेशल ओलंपिक के एथलीटों को टीम का अभ्यास देखने और अपना उत्साही समर्थन देने का एक अनूठा अवसर प्रदान किया। अभ्यास सत्र के बाद, एक दिल को छू लेने वाला मिलन और अभिवादन सत्र हुआ, जहां भारतीय पुरुष हॉकी टीम के खिलाड़ियों ने विशेष ओलंपिक भारत के एथलीटों के साथ बातचीत की और उन्हें आगामी टूर्नामेंटों के लिए प्रेरणा और सलाह दी।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम के मुख्य कोच क्रेग फुल्टन ने इस बातचीत के दौरान आभार व्यक्त करते हुए कहा हम आपके समर्थन के लिए आभारी हैं। हालाँकि हमारी एथलेटिक गतिविधियाँ अलग-अलग हैं, लेकिन हम सभी के लिए यात्रा एक जैसी है।

मिडफील्डर मनप्रीत सिंह ने कहा, स्पेशल ओलंपिक भारत का हमसे मिलना और हमें प्रेरित करना अद्भुत है। उनकी कहानियाँ और खेल के प्रति उनका प्यार सुनना वाकई प्रेरणादायक है। मुझे उम्मीद है कि जब हम ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे तो हम उन सभी को गौरवान्वित कर पाएँगे। इस यात्रा ने न केवल भारतीय पुरुष हॉकी टीम को प्रेरित किया, बल्कि खेलों के प्रति साझा जुनून और समर्पण को भी उजागर किया और एथलीटों के बीच संबंध को मजबूत किया।

मिलन और अभिवादन गतिविधि पर, एसओ भारत की अध्यक्ष डॉ. मल्लिका नड्डा ने राष्ट्रीय हॉकी महासंघ के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा, ₹हम हॉकी इंडिया के आभारी हैं कि उन्होंने हमें अपने ओलंपिक सफर का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया और हमारे एथलीटों को आगामी टूर्नामेंट के लिए टीम को अपनी शुभकामनाएं देने का मौका दिया। हमारे एथलीटों के लिए हॉकी सितारों के साथ समय बिताना और उनकी कहानियों से प्रेरित होना एक यादगार दिन था।

## भारतीय फुटबॉल टीम अक्टूबर में वियतनाम लेबनान के खिलाफ खेलेगी त्रिकोणीय टूर्नामेंट

**नई दिल्ली। एजेंसी**

भारतीय फुटबॉल टीम अक्टूबर में वियतनाम में त्रिकोणीय राष्ट्र मैत्रीपूर्ण टूर्नामेंट में भाग लेगी। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने बुधवार को उक्त घोषणा की। एआईएफएफ ने कहा कि भारतीय टीम त्रिकोणीय मैत्रीपूर्ण टूर्नामेंट में मेजबान वियतनाम और लेबनान से भिड़ेगी। एआईएफएफ ने कहा वरिष्ठ भारतीय पुरुष टीम अक्टूबर 2024 फीफा विंडो के दौरान वियतनाम में त्रिकोणीय मैत्रीपूर्ण टूर्नामेंट खेलेगी। भारत और मेजबान वियतनाम के अलावा, इस प्रतियोगिता में तीसरी टीम लेबनान है। वियतनाम (116) और लेबनान (117) दोनों ही नवीनतम फीफा रैंकिंग में भारत (124) से आगे हैं।

टूर्नामेंट का पहला मैच 9 अक्टूबर को वियतनाम और भारत के बीच खेला जाएगा। दूसरा मैच 12 अक्टूबर को भारत और लेबनान के बीच खेला जाएगा। इस बीच, आखिरी मैच 15 अक्टूबर को वियतनाम और लेबनान के बीच होगा। इससे पहले, फीफा विश्व कप 2026 के लिए क्वालीफिकेशन में भारत का अभियान विवादास्पद तरीके से समाप्त हुआ जब कतर ने मंगलवार को दोहा के जसीम बिन हमद स्टेडियम में विश्व कप क्वालीफायर दूसरे दौर के ग्रुप ए के मुकाबले में 2-1 से जीत हासिल की। हालांकि, मैच में कई हाइलाइट्स रहीं क्योंकि गेंद खेल के मैदान से बाहर जाने के बावजूद कतर को गोल करने का मौका मिला।

भारत ने खेल के 72वें मिनट तक बढ़त बनाए रखी लेकिन कतर ने विवादास्पद बराबरी के बाद खेल को बराबर कर दिया। गेंद खेल से बाहर जाने के बाद यूसुफ अयमेन ने गोल किया। उन्होंने खेल के अंतिम मिनटों में एक और गोल करके 2-1 से जीत हासिल की और भारतीय टीम का क्वालीफिकेशन दौड़ में अभियान समाप्त कर दिया।

# वाणिज्य

## तेजी के बाद कुछ सस्ता हुआ सोना, चांदी का बढ़ा भाव

**नई दिल्ली। एजेंसी**

सिर्फ एक दिन की तेजी के बाद ज्यादातर घरेलू सर्राफा बाजारों में सोने के भाव में मामूली गिरावट आई है। हालांकि चेन्नई में सोने के भाव में तेजी आई है, जिसके कारण यहां 24 कैरेट सोना एक बार फिर 73 हजार रुपये के स्तर को पार कर गया है। आज की गिरावट के कारण चेन्नई के अलावा देश के दूसरे सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 72,520 रुपये से लेकर 72,370 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी चेन्नई के अलावा दूसरे सराफा बाजारों में आज 66,490 रुपये से लेकर 66,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। सोने के विपरीत आज चांदी के भाव में तेजी आई है। इसकी वजह से

दिल्ली सराफा बाजार में चांदी 91,600 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 72,520 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 66,490 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई। इसी तरह मुंबई में 24 कैरेट सोना 72,370 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 66,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

## निफ्टी ने पहली बार 24,400 अंक के स्तर को किया पार

**नई दिल्ली। एजेंसी**

घरेलू शेयर बाजार ने लगातार तीसरे दिन रिकॉर्ड ऊंचाई से कारोबार की शुरूआत की। पहले एक घंटे के कारोबार में ही खरीदारी के सपोर्ट से शेयर बाजार मजबूती के नए शिखर पर पहुंचने में सफल रहा। निफ्टी ने ऊपर चढ़ते हुए पहली बार 24,400 अंक के स्तर को पार करने कामयाबी हासिल की। हालांकि बाजार में हुई मामूली मुनाफा वसूली के कारण सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक फिलहाल सर्वोच्च स्तर से थोड़ा नीचे खिसक कर कारोबार करते नजर आ रहे हैं। साठ मिनट का कारोबार होने के बाद सेंसेक्स 0.41 प्रतिशत और निफ्टी 0.38 प्रतिशत की मजबूती के साथ कारोबार कर रहे थे।

शुरूआती एक घंटे का कारोबार होने के बाद स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से आईसीआईसीआई बैंक, एचसीएल टेक्नोलॉजी, इंफोसिस, टाटा मोटर्स और एनटीपीसी के शेयर 1.92 प्रतिशत से लेकर 1.29 प्रतिशत की मजबूती के साथ कारोबार कर रहे थे। दूसरी ओर एचडीएफसी बैंक, इंडसइंड बैंक, अडिणी एंटरप्राइजेज, सिप्ला और हीरो मोटोकॉर्प के शेयर 1.45 प्रतिशत से लेकर 0.42 प्रतिशत की गिरावट के साथ कारोबार करते नजर आ रहे थे। अभी तक के कारोबार में स्टॉक मार्केट में 2,263 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हो रही थी। इनमें से 1,462 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में कारोबार कर रहे थे, जबकि 801 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में कारोबार कर रहे थे। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 22 शेयर लिवाली के सपोर्ट से हरे निशान में बने हुए थे। दूसरी ओर 8 शेयर बिकवाली के दबाव में लाल निशान में कारोबार कर रहे थे। जबकि निफ्टी में शामिल शेयरों में से 31 शेयर हरे निशान में और 19 शेयर लाल निशान में कारोबार करते नजर आ रहे थे। बीएसई का सेंसेक्स आज लगातार तीसरे दिन ऑल टाइम हाई का नया रिकॉर्ड बनाते हुए 334.99 अंक की मजबूती के साथ 80,321.79 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरूआत होने के बाद बिकवाली का मामूली दबाव बनने की वजह से ये सूचकांक फिसल कर 80,113.81 अंक के स्तर पर आ गया। लेकिन इसके बाद एक बार फिर चौतरफा खरीदारी शुरू हो गई, जिसके कारण ये सूचकांक मजबूती के नए शिखर 80,392.64 अंक तक पहुंच गया। बाजार में लगातार जारी खरीद बिक्री के बीच पहले एक घंटे का कारोबार होने के बाद सुबह 10:15 बजे सेंसेक्स 329.88 अंक की मजबूती के साथ 80,316.68 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा था।

सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी में भी आज 83.45 अंक की बढ़त के साथ मजबूती का नया रिकॉर्ड बनाते हुए 24,369.95 अंक के स्तर से कारोबार की शुरूआत की।

## ग्लोबल मार्केट से मजबूत संकेत एशियाई बाजारों में भी तेजी का रुख

**नई दिल्ली। एजेंसी**

ग्लोबल मार्केट से मजबूती के संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी बाजार में लगातार दूसरे दिन उत्साह का माहौल बना रहा, जिसके कारण वॉल स्ट्रीट के सूचकांक बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहे। हालांकि डाउ जॉन्स फ्यूचर्स फिलहाल मामूली गिरावट के साथ कारोबार करता नजर आ रहा है। अमेरिकी बाजार की तरह ही यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र के दौरान तेजी बनी रही। एशियाई बाजारों में भी आज आमतौर पर मजबूती के साथ कारोबार हो रहा है।

सितंबर के महीने में ब्याज दरों में कटौती होने की उम्मीद के कारण पिछले सत्र के दौरान अमेरिकी बाजार में तेजी का माहौल बना रहा। एसएंडपी 500 इंडेक्स 0.51 प्रतिशत की बढ़त के साथ 5,537.02 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह नैस्डेक ने 159.54 अंक यानी 0.88 प्रतिशत की मजबूती के साथ 18,188.30 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। हालांकि डाउ जॉन्स फ्यूचर्स फिलहाल 0.01 प्रतिशत अंक की सांकेतिक कमजोरी के साथ 39,303.45 अंक के स्तर पर कारोबार करता नजर आ रहा है।

यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र के दौरान लगातार तेजी बनी रही, जिसके कारण यहां के तीनों प्रमुख सूचकांक बढ़त के साथ हरे निशान में बंद हुए। एफटीएसई इंडेक्स 0.61 प्रतिशत उछल कर 8,171.12 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

# पहली बारिश ने खोली सार्वजनिक निर्माण विभाग के कामों कि पोल

## मुख्यालय के ए ब्लॉक तथा क्वालिटी कंट्रोल बिल्डिग में पानी लगा चुने

चमकता राजस्थान

**जयपुर।** सार्वजनिक निर्माण विभाग मुख्यालय में हर साल मेंटेनेंस के नाम पर लाखों रुपया ख़र्च होने के बावजूद प्री मानसून की पहली बारिश में ही छत से पानी टपकने लगा है. यह हम नहीं बल्कि तस्वीरें बयां कर रही है जिन्होंने प्री मानसून की पहली बारिश ने ही निर्माण कार्य की पोल खोल दी है.

इसमें अधीक्षण अभियंता वृत्त शहर जयपुर की बड़ी लापरवाही सामने आई है!

बहुत आश्चर्यजनक है,इतने सारे इंजीनियर यहां हैं और छत से पानी टपक रहा है,किसी ने ऐसा नहीं सोचा होगा कि सार्वजनिक निर्माण विभाग जो पुरे राजस्थान में बड़े बड़े भवनों और सड़कों के कार्यों को अंजाम देता है उसका मुख्यालय ही इस पहली बारीश में चुने लगेगा इस मामले पर ध्यान दिया जाना चाहिए और पता लगाया जाना चाहिए कि क्या कमी थी। यह बहुत महत्वपूर्ण है,छत से पानी निकालने के लिए कोई जगह नहीं है,अगर भारी बारिश हुई तो छत पर तालाब बन जाएगा।

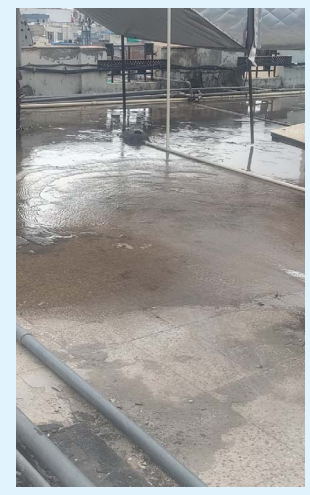

### भारी वित्तीय अनियमितता की होनी चाहिए जाँच

मिली जानकारी के अनुसार अधीक्षण अभियंता वृत्त शहर जयपुर ने जोब नंबर देने के नाम पर सार्वजनिक निर्माण विभाग मुख्यालय में करोड़ों रुपया मेंटेनेंस पर ख़र्च किया! अधीक्षण अभियंता ने मुख्यालय में करोड़ों रुपये खर्च कर अन्य गैरज़रूरी कार्य सम्पादित करवाये लेकिन छतों की मरम्मत ,टॉयलेट के रख रखाव,ड्रेनेज सिस्टम ,वॉटर हार्वेस्टिग सिस्टम जैसे बुनियादी कार्यों को नहीं करवा कर आरटीपीपी एक्ट का खुला उल्लंघन करते हुए भारी वित्तीय अनियमितता की है ,जिसकी वजह से मुख्यालय में ए ब्लॉक,क्वालिटी कंट्रोल बिल्डिग की छतें जर्जर हो चुकी है और जोन 1,2 के बरामदों की छत से पानी टपक रहा है, लाखों रुपया ख़र्च कर करवाया गया रंगरोगन ख़राब हो चुका है इसमें भारी वित्तीय अनियमितता की शिकायत सामने आ रही है जिसकी जाँच होनी चाहिए!

### वॉटर हार्वेस्टिग सिस्टम भी ख़राब पड़ा है

» सार्वजनिक निर्माण विभाग के मुख्यालय में वॉटर हार्वेस्टिग सिस्टम भी बनाया गया था लेकिन प्रशासनिक लापरवाही के चलते वह भी कचरे के ढेर में तब्दील हो चुका है और सालों से बंद पड़ा है बारिश का पानी नाली में बह रहा है!

### मुख्य सचिव भी जता चुके हैं नाराज़गी

» मुख्य सचिव सुधांशु पंत ने जब सार्वजनिक निर्माण विभाग के मुख्यालय का दौरा किया था तब उन्होंने भी मुख्यालयों में पड़ी गंदगी पर सवाल उठाए थे और नाराज़गी ज़ाहिर की थी !

### डी पी सैनी ने लिया वीआरएस

» सार्वजनिक निर्माण विभाग में डीग में कार्यरत अधीक्षण अभियंता डी पी सैनी ने वीआरएस ले लिया है, सार्वजनिक निर्माण विभाग के संयुक्त शासन सचिव कमल राम मीणा ने एक आदेश जारी कर वीआरएस की स्वीकृति दी!

## संक्षिप्त समाचार

### महू चौकी पर वृक्षारोपण किया गया

**चमकता राजस्थान / हिंडौन (राजवीर सिंह)** महू चौकी प्रभारी महेश कुमार मीना के साथ मिलकर वृक्षारोपण किया गया। मीना ने मेरे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आमजन को भी ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने चाहिए।इस मौके पर कांस्टेबल रामराज, कांस्टेबल भूपेन्द्र सिंह,पुष्पेंद्र गारूवाल सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

### एक्सीडेंट में बाल - बाल बची बामनवास से कांग्रेस विधायक इंदिरा मीणा

- **मुंबई एक्सप्रेस-वे पर टायर फटने से अनियंत्रित हुई कार डिवाइडर से टकराई**
- **विधायक इंदिरा मीणा को लगी हल्की फुल्की चोट**

**चमकता राजस्थान। जयपुर/सवाई माधोपुर (खलील कुरैशी)** । जिले के बौंली थाना क्षेत्र में दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे पर बामनवास से कॉग्रेस विधायक इंदिरा मीणा की कार का एक्सीडेंट हो गया। दुर्घटना में विधायक की कार का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। हादसे में विधायक इंदिरा मीणा बाल बाल बच गई। हालांकि दुर्घटना में विधायक इंदिरा मीणा को हल्की चोटे आई। जानकारी के मुताबिक बामनवास विधायक - इंदिरा मीणा जयपुर से अपने बौली स्थित निवास पर लौट रही थी। इस दौरान बौंली थाना क्षेत्र में एक्सप्रेस वे पर विधायक की कार का टायर फट गया। जिससे कार असंतुलित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में कार का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। इस दौरान ड्राइवर की सूझबूझ से विधायक इंदिरा मीणा बाल बाल बच गई और बड़ा हादसा टल गया। हादसे के दौरान समय पर कार के एयरबैग खुलने से भी बड़ा हादसा होने से बच गया। हादसे मे विधायक इंदिरा मीणा को हल्की चोटे आई है। हादसे के बाद दूसरे साधन की सहायता से विधायक इंदिरा मीणा को बौली लाया गया। जहां डॉक्टर मनीष मीणा व उनकी टीम ने विधायक इंद्रा मीणा का स्वास्थ्य परीक्षण किया। फिलहाल विधायक सकुशल है। विधायक इंदिरा मीणा ने बताया कि असंतुलित होकर कार डिवाइडर से टकरा गई थी, लेकिन क्षेत्र के लोगों की दुआओं के चलते वह हादसे में बच गई। हादसे के बाद स्थानीय जनप्रतिनिधियों व क्षेत्र के लोगों ने विधायक इंदिरा मीणा के निवास पर पहुंचकर उनके कुशलक्षेम पूछी। हादसे के वक्त कार में चालक व स्टाफ भी मौजूद था। उनके परिवार के लोग दूसरी कार से आ रहे थे। डॉ मनीष मीणा ने बताया कि प्राथमिक स्वास्थ्य परीक्षण के अनुसार विधायक इंदिरा मीणा स्वस्थ है और उन्हें मामूली चोट आई है, जिस पर ड्रेसिंग कर आवशयक दवाई दे दी गई है।

## महिला शिक्षा में हर रोज अभिनव और सकारात्मक प्रयासों से स्थापित हो रहें नये नयें आयाम : उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा

चमकता राजस्थान

**जयपुर (खलील कुरैशी)** । उपमुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्ष मंत्री डॉ. प्रेमचन्द बैरवा ने गुरूवार को वर्धमान महावीर खुला विश्वविधालय के जेएलएन रोड़ स्थित क्षेत्रीय कार्यालय पर पीटीईटी परीक्षा 2024 का परिणाम जारी किया। उन्होंने कहा कि पीटीईटी पर-ीक्षा में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों की अपेक्षा अधिक रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश में लगातार महिला शिक्षा की स्थिति बेहतर हो रही है। परीक्षा में पीटीईटी वर्ग में हनुमानगढ के देवीलाल 526 अंको के साथ, बीएबीएड वर्ग में झुन्झुनू की अक्षरा सैनी 514 अंको के साथ एव 'बीएससी बीएड वर्ग में डुंगरपुर के मीत पसौली 511 अंको के साथ अव्वल रहें। उपमुख्यमंत्री ने तीनो वर्गों में प्रथम स्थान हासिल करने वाले परीक्षार्थियों को फोन पर शुभकमनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री ने वर्धमान खुला विश्वविधालय द्वारा तैयार डॉक्युमेन्ट्री के माध्यम से विश्वविधालय के परिसर एवं क्षेत्रिय केन्द्रो, विधार्थियों के लिये उपलब्ध सुविधाओं का भी अवलोकन किया। उन्होने विश्वविधालय प्रबन्धन का परीक्षा के समयबद्ध एवं कुशल संचालन के लिए आभार व्यक्त किया। उल्लेखनीय है कि 09 जून को 1055 केन्द्रो पर आयोजित हुई पीटीईटी-2024 परीक्षा में कुल 428242 परीक्षार्थियो ने हिस्सा लिया था।

- **बोलें:- प्रदेश में लगातार बेहतर हो रही महिला शिक्षा की स्थिति**

### नाम परिवर्तन

2024 मैं महिपाल दुसाद पुत्र श्री सुणा राम दुसाद उम्र वर्ष जाति जाट निवासी ग्राम नागल भरडा तहसील चौमूँ जिला जयपुर राजस्थान का रहने वाला हूं जो कि निम्न बहल्फ बयान करता हूं कि यह कि मे उक्त स्थान का मुल निवासी हूँ।यह कि मेरी पुत्री का जन्म प्रमाण पत्र बनाते समय पर नाम उर्विका चौधरी अकिंत हो गया जो गलत है।यह कि मेरी पुत्री का सही नाम ओजस्वी चौधरी है जो सही है।यह कि मेरी पुत्री का अब जन्म प्रमाण पत्र मे उर्विका चौधरी को दुरस्त कर सही नाम ओजस्वी चौधरी अकिंत किया जावें। यह कि उक्त जन्म प्रमाण पत्र का मेरे द्वारा किसी भी प्रकार से उपयोग मे नही लिया गया है। यह कि उक्त शपथ पत्र को मेरा साक्षी माना जावें।

## चूरू पुलिस की ऑपरेशन वज्र प्रहार के तहत बड़ी कार्रवाई

### हिस्ट्रीशीटर द्वारा गोचर भूमि में बनाये आलीशान होटल को किया गया ध्वस्त

चमकता राजस्थान

जयपुर/चूरू! (खलील कुरैशी) 4 जुलाई। चूरू जिला पुलिस एवं प्रशासन ने थाना हमीरवास के हिस्ट्र-ीशीटर दिनेश कुमार यादव पुत्र ओमप्रकाश निवासी रामपुरा थाना हमीरवास द्वारा अवैध गतिविधियों से कमाई गई रकम से गोचर भूमि पर बनाए गए एक आलीशान होटल को ध्वस्त कर दिया है। जिला पुलिस की अपराधिक प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों के विरुद्ध अवैध निर्माण ध्वस्त करने की यह बड़ी कार्रवाई है।एसपी जय यादव ने बताया कि राज्य सरकार के निर्देश पर आपराधिक गतिविधियों में लिप्त बदमाशों द्वारा अतिक्रमण किये गये निर्माण को ध्वस्त करने का विशेष अभियान चलाया जा रहा है। थाना हमीरवास के हिस्ट्रीशीटर दिनेश कुमार के विरुद्ध डकैती, लूट, चोरी, अवैध हथियार, मारपीट करने जैसे गंभीर प्रकृति के कुल 06 अपराधिक प्रकरण दर्ज है।सक्रिय अपराधी होने के साथ हिस्ट्रीशीटर दिनेश कुमार द्वारा गोचर भूमि पर बनाए गए होटल में असामाजिक गतिविधियां चलने की शिकायते पूर्व में भी प्राप्त हुई थी। जिनके सम्बंध में आवशयक कार्यवाही की गई थी फिर भी हिस्ट्रीशीटर दिनेश कुमार प्रशासन व पुलिस को चुनौती देते हुऐ चोरी छिपे ऐसी गतिविधियों को चला रहा था। इस पर बड़ी कार्रवाई करते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजगढ किशोरीलाल के निर्देशन, सीओ राजगढ़ प्रशांत किरण आईपीएस के नेतृत्व में गुरुवार को एसएचओ हमीरवास मदनलाल विश्नोई एवं उप निरीक्षक फरमान खान मय जाप्ता द्वारा प्रशासन के साथ मिलकर गांव रामपुरा की गोचर भूमि में अतिक्रमण कर बनाये गये अवैध होटल को ध्वस्त किया गया।

## कार्यालय पंचायत समिति श्रीनगर (अजमेर)

क्रमांक :– पं स श्री/बोली विविधि/2024–25/7138 दिनांक : 04/07/2024

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पंचायत समिति कार्यालय व महानरेगा कार्यालय में वर्ष 2024–25 हेतु निम्नानुसार सामग्री/सेवा की बोली बंद लिफाफे में इच्छुक फर्म/व्यक्ति/अपनी बोली नीचे दी गई सारणी व निर्धारित दिनांक को बोली आमंत्रित की जाती है।

| क्र. स. | सामग्री/ सेवा का विवरण | अनुमानित लागत (राशि में) | बोली शुल्क | फार्म विक्रय की दिनांक | बोली फार्म विक्रय की अन्तिम तिथि व समय | बोली फार्म जमा कराने की तिथि व समय | बोली खोलने की तिथि | Sppp Portal पर देखने हेतु UBN No. दिनांक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | फ्लेक्स प्रिन्टिग कार्य | 3.00 | 500 | 09.07.2024 | 09.07.2024 दोपहर 2.00 बजे तक | 09.07.2024 दोपहर 2.30 बजे तक | 09.07.2024 | ZAJ2425GLOB00161 |
| 2. | फोटो स्टेट एवं फ्लेक्स प्रिन्टिग कार्य हेतु दर | 1.00 | 500 | 09.07.2024 | 09.07.2024 दोपहर 2.00 बजे तक | 09.07.2024 दोपहर 2.30 बजे तक | 09.07.2024 | ZAJ2425GLOB00163 |
| 3. | कम्प्यूटर मरम्मत सामग्री हेतु | 2.50 | 500 | 09.07.2024 | 09.07.2024 दोपहर 2.00 बजे तक | 09.07.2024 दोपहर 2.30 बजे तक | 09.07.2024 | ZAJ2425GLOB00162 |
| 4. | विविन्न प्रशिक्षिणों में भोजन व चाय नास्ता | 5.00 | 500 | 09.07.2024 | 09.07.2024 दोपहर 2.00 बजे तक | 09.07.2024 दोपहर 2.30 बजे तक | 09.07.2024 | ZAJ2425GLOB00164 |
| 5. | स्टेशनरी एवं प्रिन्टिग कार्य हेतु | 6.00 | 500 | 09.07.2024 | 09.07.2024 दोपहर 2.00 बजे तक | 09.07.2024 दोपहर 2.30 बजे तक | 09.07.2024 | ZAJ2425GLOB00165 |

विकास अधिकारी
पंचायत समिति श्रीनगर, अजमेर

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान,
मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929